जुलाई-२०२६ ◆ वर्ष १५ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जुलाई-२०२६

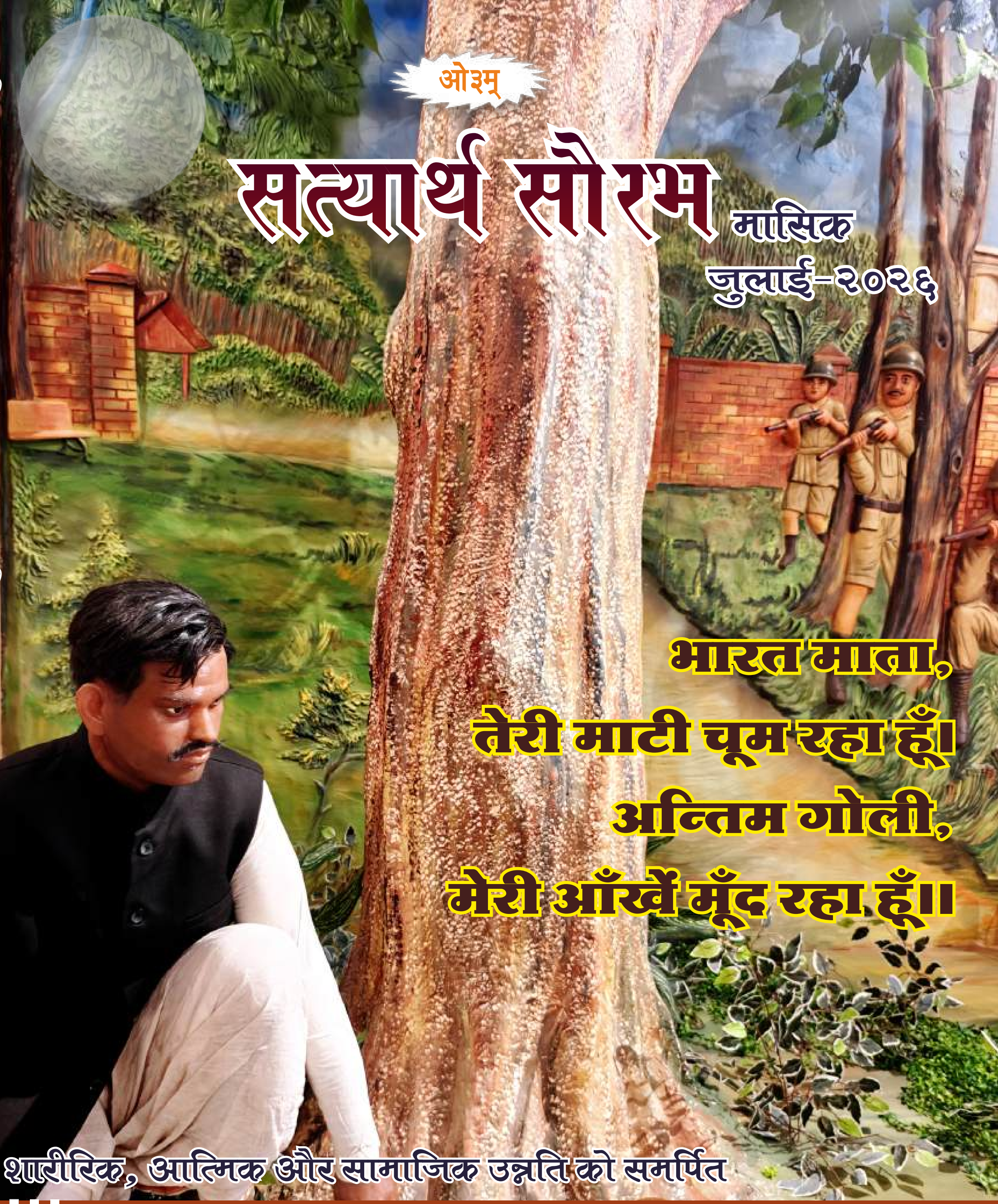

भारत माता,
तेरी माटी चूम रहा हूँ।
अन्तिम गोली,
मेरी आँखें मूँद रहा हूँ।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १७७

हर समय स्वाद ही स्वाद
MDH मसाले
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
GARAM MASALA
SAMBHAR MASALA
CHANA MASALA
KITCHEN KING
SHAHI PANEER MASALA
KASHMIRI MIRCH
CHUNKY CHAT MASALA
RAJMAH MASALA
SABZI MASALA
DEGGI MIRCH
PEACOCK KASOORI METHI
PAV BHAJI MASALA
VEG BIRYANI MASALA
KARAHI PANEER MASALA
JAL JEERA MASALA
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1500
आजीवन	- 2500 रु.	$ 400
पंचवर्षीय	- 1200 रु.	$ 250
वार्षिक	- 300 रु.	$ 60
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत्
२०८३
दयानन्दाब्द
२०२

July - 2026

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	4000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.

समाचार २१

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
१२	चन्द्रशेखर आजाद की मुखबिरी किसने की थी?
१४	मांसाहार : मनुष्य की क्रूरता का कारण
१६	पंडित रतिराम जी शर्मा : प्रेरणा के स्रोत
१७	यज्ञ एवं शोध
१९	तीर्थयात्रा साध्य नहीं साधन है
२२	जीवन अमृत
२६	स्वास्थ्य- जामुन (एक औषधीय वृक्ष)
२८	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष -१५ अंक -०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अधिक कल्याण प्राप्त कर

भद्रादधि श्रेयः प्रेहि बृहस्पतिः पुरएता ते अस्तु।
अथेममस्या वर आ पृथिव्या आरेशत्रुं कृणुहि सर्ववीरम्।। - अथर्ववेद ७/८/१

शब्दार्थ– **भद्रात्**= भले से, **अधि**= अधिक, ऊपर **श्रेयः**= श्रेय, कल्याण, **प्रेहि**= प्राप्त कर। **बृहस्पतिः**= बड़े-बड़ों का भी स्वामी, वेद-ज्ञानी **ते**= तेरा, **पुरः एता**= अगुवा; नेता, **अस्तु**= होवे। **अथ**= और, **अस्याः पृथिव्याः**= इस पृथिवी से, **इमम्**= इसे ही **आ वरः**= चुन, पसन्द कर **सर्ववीरम्**= सब वीरों से युक्त, **शत्रुम्**= शत्रु को **आरे कृणुहि**= दूर कर।

व्याख्या- बहुत-से मनुष्यों का स्वभाव होता है कि वे थोड़े से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। वेद कहता है भले से अधिक या उत्कृष्ट कल्याण को प्राप्त कर, अर्थात् थोड़े से सन्तुष्ट न हो, अधिक-से-अधिक प्राप्त करने का यत्न कर। सनत्कुमार नारद को समझाते हुए कहते हैं-

यो वै भूमा तत्सुखं, नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखं, भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति। - छान्दोग्य. उ. ७/२३/१

जो भूमा= बड़ा है, वह सुखकारी है, थोड़े में सुख नहीं है, भूमा ही सुखकारी है, अतः भूमा ही को जानना चाहिए।

थोड़े-से भद्र को प्राप्त कर उस पर सन्तुष्ट होने को सांख्यशास्त्र में 'तुष्टि' नामक दोष माना गया है, अतः मनुष्य को सदा अधिक उन्नत होने का यत्न करना चाहिए।

इस सामान्य उपदेश के साथ एक गम्भीर आशय है। भद्र का लक्षण वेद में इस प्रकार लिखा है-

विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवाः।

जिसको विद्वान् लोग पसन्द करें, उसे भद्र कहते हैं, अर्थात् भद्र- विद्वानों की पसन्द की क्रियादि द्वारा अधिक श्रेय प्राप्त कर। जो भलाई से अधिक श्रेय है उसे प्राप्त कर। वेद के ये शब्द श्रेय और प्रेय मार्ग का उपदेश कर रहे हैं और संकेत से कह रहे हैं कि प्रेय की अपेक्षा श्रेय को प्राप्त कर।

इस श्रेय-प्राप्ति के लिए, इस दुर्गम घाटी में जाने के लिए तू बृहस्पति= परमज्ञानी भगवान् को अपना अगुआ-नेता बना। प्रभु तक पहुँच नहीं है, तो प्रभु के प्यारे ब्रह्मज्ञानी को अपना नेता बना। साधारण जन इस मार्ग पर नहीं ले-जा सकते। कठोपनिषत् में ठीक ही कहा है-

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः।
अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात्।। - कठोपनिषद् १/२/८

यह ऐसा विषय है जिसका अनेक प्रकार से विचार किया जाता है; साधारण जन के उपदेश करने से, यह सरलता से समझ में नहीं आ सकता। यह स्वात्म-संवेद्य तत्त्व है। जिसने इसका स्वयं अनुभव नहीं किया, वह कैसे इसमें गति करा सकता है ? यह अत्यन्त सूक्ष्म है। साधारण प्रमाणों के अनुसार तो इसकी तर्कणा भी नहीं की जा सकती ।

हम दिन-रात लोगों को ब्रह्मविद्या पर व्याख्यान करते सुनते हैं, किन्तु श्रोताओं के पल्ले प्रायः कुछ नहीं पड़ा करता। इसका प्रधान कारण यह है कि प्रायः स्वयं व्याख्याता को ही यह ज्ञात नहीं होता कि वह क्या बोल रहा है। जहाँ यह तत्त्व तर्क से परे है, वहाँ यह भी है कि जब इस तत्त्व का साक्षात्कार हो जाता है, तब संसार का कोई तर्क उससे साधक को हटा नहीं सकता। किसी के हाथ में आँवला पड़ा है, वह उसे देख रहा है, उसने उसे

चख भी लिया है। अब संसार का कोई बड़े-से-बड़ा तार्किक भी उसके उस ज्ञान को झुठला नहीं सकता। कठोपनिषत् में इस भाव को बड़े सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया गया है-

नैषा तर्केण मतिरापनेया। - कठोपनिषद् १/२/९

यह बुद्धि तर्क से नहीं हटाई जा सकती।

कैसे हटाई जा सके? प्रत्यक्ष से सभी प्रमाण नीचे हैं, अतः सावधान होकर श्रेय और प्रेय का ज्ञान करके उन दोनों का भेद समझकर प्रेय की अपेक्षा श्रेय प्राप्त कर। प्रभु तुझे इस मार्ग पर चलाएँ।

इस पृथिवी के सारे पदार्थों में यही वरण करने, चुनने योग्य पदार्थ है। संसार के सारे पदार्थ उत्पाद-विनाशशील हैं, पैदा होते और मरते हैं, आते और जाते हैं। एक श्रेयः ही ध्रुव है। यम नचिकेता को कहता है-

जानाम्यहं शेवधिरित्यनित्यं नह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्।
ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम्॥ - कठोपनिषद् १/२/१०

मैंने जान लिया है कि धन-दौलत सब अनित्य हैं, इन अनित्य पदार्थों से ध्रुव=नित्य अविनाशी प्राप्त नहीं किया जा सकता, अतः मैंने नचिकेत अग्नि=सन्देहों को भस्म करनेवाली योगाग्नि का चयन किया है, तब इन अनित्य द्रव्यों {के त्याग} के द्वारा अथवा इन अनित्य द्रव्यों के साथ रहते हुए भी नित्य को प्राप्त कर सका हूँ।

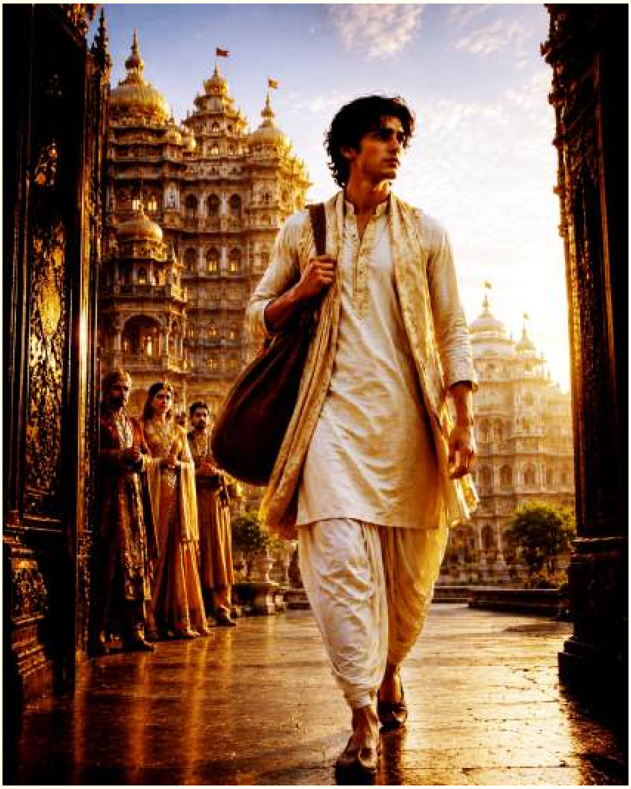

इस श्रेयोमार्ग पर चलना बहुत कठिन है। यह मार्ग विघ्न-बाधाओं से भरपूर है, पग-पग पर शत्रु खड़े हैं। शत्रु भी साधारण नहीं हैं, वे सभी वीर-महावीर हैं। उन्हें देखकर पथिक को कम्पकपी आने लगती है। पथिक का, साधक का कर्त्तव्य है कि वह इन शत्रुओं को मारकर आगे चले। काम-क्रोध आदि शत्रु साधक का मार्ग रोककर खड़े हैं; ये ऐसे शत्रु हैं जो मित्र का रूप धरके पथिक को मार्ग से बिदका देते हैं, बहका देते हैं। भगवान् को अगुआ बनाने वाले पथिक शीघ्र इन शत्रुओं का रूप जान लेते हैं। ये असुर हैं, **'रूपाणि प्रतिमुंचमानाः'** रूप बदलकर सामने आते हैं, अतः इन असुरों के चकमे में साधक को नहीं आना चाहिए, वरन् इनका नाश करना चाहिए। किसी साधक ने सावधान करते हुए कहा है-

''जाग-जाग रे बटोही, यहाँ चोरों का डर रे!''

सचमुच यहाँ बड़ा भय है, किन्तु मार्ग भी यही है, अतः शत्रुओं को मारकर आगे बढ़ना चाहिए। यदि असावधानतावश इन्हें न मारा, तो फिर उपनिषद् के शब्दों में **'महती विनष्टिः'** महान् विनाश सम्मुख उपस्थित है। अध्यात्मवादी इनको 'पर' (पराया), 'परिपन्थी' (शत्रु), बटमार, मार्ग रोकनेवाला आदि नाम देते हैं।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

अभी तक तृतीय नेत्र जागरण को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता था। अब इसमें एक और नया नाम जुड़ गया। एक आलेख पढ़ते समय अनायास यह नाम सामने आया। लेखक का कहना था कि 'गत दो सौ वर्षों से विश्वभर में ऐसे दावे किये जा रहे हैं कि आँखों पर पट्टी बाँधकर देखा जा सकता है, पढ़ा जा सकता है, (यद्यपि जब उनकी Test conditions में परीक्षा की गयी तो वे अपने दावे को सत्यापित नहीं कर पाए) और इसे अनेकों नामों जैसे मिड ब्रेन एक्टिवेशन, पीनियल ग्लैंड जागरण, थर्ड आई, दिव्य चक्षु, वेद विद्या आदि नामों से अभिहित किया जाता है, मैं इसको गांधारी विद्या कहता हूँ, क्योंकि गांधारी जी ने भी तो पूरा जीवन आँखों पर पट्टी बाँध कर व्यतीत किया था।' वे इस सिद्धि की स्वामिनी थीं (?) जो भी हो यह 'गांधारी विद्या' नाम हमें भी दिलचस्प लगा।

'तीसरी आँख' इस विषय को लेकर हम सत्यार्थ सौरभ के दो अंकों में पहले भी लिख चुके हैं। (**चमत्कार को नमस्कार- अक्टूबर २०२४, कलियुग में इन्द्रियों ने बदल लिया काम- फरवरी २०२५**)। महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम पाखण्ड खण्डिनी पताका की स्थापना की थी। पाखण्ड का निवारण आर्यसमाज का अनिवार्य कार्य है। अन्य कार्य तो और संस्थाएँ एवं संगठन भी कर रहे हैं, परन्तु अन्धविश्वास निर्मूलन तो आर्यसमाज ने ही करना है। यद्यपि इस विषय पर सर्वोच्च संगठन द्वारा व्यापक योजना बनाने की आवश्यकता है। परन्तु प्रत्येक आर्य का भी एतद् विषयक कर्त्तव्य है। हम पत्रिका निकालते हैं तो इस सम्बन्ध में विचार, पत्रिका के माध्यम से ही प्रकाशित कर सकते हैं। अब तक हमने सर्वाधिक लेख अंधविश्वास निर्मूलन को लेकर ही लिखे हैं। तो अपना कर्तव्य मानते हुए आगे अंकों में भी इस दिव्यता (?) की एक-एक प्रक्रिया पर विस्तार से लिखने का विचार रखते हैं।

इस दिव्य योग्यता को किसी भी नाम से पुकारा जाय, इसका केन्द्र बिन्दु यही है **'Seeing without eyes.'** इसीलिए इस प्रकल्प के संचालक लोग भौतिक आँखों को पट्टी आदि से बन्द कर देते हैं। तत्पश्चात् किसी वस्तु का रंग बताना, किसी Text को पढ़ना आदि करके दिखाते हैं।

अनेक सन्दर्भ ऐसे मिलते हैं जहाँ इन दावों को वैज्ञानिक तरीके से परखा गया। ऐसे दावे नियंत्रित वैज्ञानिक परिवेश में सर्वत्र असफल रहे। सभी स्थलों पर इसे ट्रिक माना गया, फिर भी यदि ऐसा हो कि बिना किसी ट्रिक

के, बिना भौतिक चक्षुओं के व्यक्ति देख सके तो यह सामान्य बात नहीं है। हमारे विचार से फिर यह योग दर्शन में वर्णित योगज सिद्धि (विभूति) ही हो सकती है न कि कुछ दिनों के अभ्यास से उत्पन्न दिव्यता।

महर्षि दयानन्द जी महाराज योगज सिद्धियों को स्वीकार करते थे। उनके जीवन-चरित्र में आता है कि उन्होंने यह बात स्वीकार की थी कि उन्होंने ऐसे योगियों को देखा था जो जमीन से ऊपर उठ जाते थे। स्वामी जी के जीवन में अनेक बार योगज विभूतियों पर उनके अधिकार का प्रमाण मिलता है। उदयपुर में जल के ऊपर समाधि की बात ही ले लीजिये। भविष्य में घटने वाली घटनाओं को अनेक बार सहज भाव से उन्होंने पहले ही बता दिया था। यह सब निःसन्देह योगज सिद्धियाँ थीं। जो एक जन्म में तो विरलों को ही सिद्ध हो पाती हैं और जिन्हें सिद्ध होती हैं वे इनका प्रदर्शन नहीं करते। ऋषि परम्परा में यह सब प्रदर्शन निषिद्ध है।

अतएव निष्कर्ष यह है कि Seeing without eyes सम्भव तो है, परन्तु योगज सिद्धि (विभूति) के रूप में।

योग दर्शन में सिद्धि का वास्तविक द्वार संयम (धारणा+ध्यान+समाधि के एकत्र प्रयोग को भगवान् पतंजलि ने "संयम" कहा।) कहा है- **''त्रयमेकत्र संयमः''** - विभूति पाद, सूत्र २/३

जिस वस्तु या तत्त्व पर संयम किया जाए, उसका प्रज्ञालोक (दिव्य ज्ञान) प्रकट होता है।

सूत्र २/१५ - प्रवृत्त्यालोक-न्यास (दिव्य दृष्टि)

''प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम्''

इस सूत्र में दिव्य/सूक्ष्म दृष्टि की सिद्धि का वर्णन है।

"योगी अपनी ज्ञान-ज्योति को किसी भी स्थान पर न्यस्त (प्रक्षेपित) करके- सूक्ष्म, आवृत (छिपी हुई) और दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।"

यहाँ भौतिक नेत्रों की आवश्यकता नहीं, यह आन्तरिक ज्ञान-प्रकाश द्वारा देखना है। यही दिव्य दृष्टि है, इसी को तीसरी आँख कहा जा सकता है।

परन्तु क्या ऐसा योगी प्रदर्शनों में उलझ सकता है? महर्षि पतंजलि की महत्वपूर्ण चेतावनी-

''ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः'' - विभूति पाद, सूत्र २/२६

"ये सिद्धियाँ समाधि के मार्ग में बाधाएँ हैं, व्युत्थान (सांसारिक दृष्टि) में भले ही विभूतियाँ लगें।" अर्थात्- सिद्धियाँ लक्ष्य नहीं, उपसर्ग (विघ्न) हैं। इनमें आसक्त होने वाला साधक कैवल्य से भटक जाता है। असली लक्ष्य है- चित्तवृत्तिनिरोध और कैवल्य।

अतः यह माना जा सकता है कि अष्टांग योग के माध्यम से देखने हेतु भौतिक चक्षुओं और प्रकाश की आवश्यकता को समाप्त कर दिया जा सकता है, और बिना इनके योगी देख सकता है, परन्तु यह साधना अत्यन्त विरले लोग ही सिद्ध कर सकते हैं।

एक बात विचित्र है। नाना प्रकार के योग की चर्चा करने वाले योग के प्रथम दो सापानों की सिरे से चर्चा नहीं करते। यम-नियमों की साधना के अभाव में भी आँख पर पट्टी बाँधकर संक्षिप्त कार्यशाला में क्या सिद्धि प्राप्त हो सकती है? चिन्त्य है। यह सम्भव नहीं लगता।

यहाँ विनम्रता और सम्मान के साथ कहना चाहेंगे कि जिन्हें भगवान ने चर्मचक्षु प्रदान किये हैं उनकी आँखों को पट्टी से बाँधने से क्या लाभ? अगर आपमें दिव्यता प्रदान करने की यह क्षमता प्रभुकृपा से है भी तो अनेकों ऐसे अभागे हैं जो नेत्रों से वंचित हैं, उनको दिव्य चक्षु प्रदान करें तो उनका जीवन ही बदल जाएगा। किसी के पट्टी बाँधने और उसकी जाँच कराने की आवश्यकता ही नहीं होगी। एक रिपोर्ट के अनुसार सन् २०२० तक विश्व में पूर्ण रूप से अंधे लोगों की संख्या ३.२२ करोड़ बतायी गयी है। चिन्ता यह जताई गयी है कि आने वाले दो दशकों में इनकी संख्या दो डिजिट में पहुँच जायेगी। ये करोड़ों वंचितजन आपकी ओर देख रहे हैं, इनका उद्धार करें। अस्तु

अब व्यक्ति देखता कैसे है? यह जानना इस विषय में आगे बढ़ने से पहले उचित ही होगा।

देखने की पूरी वैज्ञानिक प्रक्रिया अर्थात् कोई वस्तु हमें क्यों दिखती है और भौतिक चक्षु का इसमें क्या भाग है?

प्रकाश के स्रोत से निकला प्रकाश किसी वस्तु से परावर्तित (Reflect) होता है और आँख की तरफ आता है। और आँख से विभिन्न अंगों से होता हुआ मस्तिष्क तक पहुँचता है। अर्थात् क्रमशः Cornea (कॉर्निया), Pupil और Iris, Lens, Retina, Rods-Cones-(रंग पहचानने के लिए) ये कोशिकाएँ प्रकाश को विद्युत संकेत में बदलती हैं। Optic Nerve के माध्यम से Brain (Visual Cortex) तक जाता है। यही उस वस्तु का असली "देखना" है। मस्तिष्क का Visual Cortex इन संकेतों को Interpret करता है, तभी हम वास्तव में "देखते" हैं। उल्टी Image को सीधा करना, रंग पहचानना, दूरी आँकना यह सब Brain करता है। अर्थात् आँख केवल Camera है देखना दिमाग का काम है। "देखना" आँख और मस्तिष्क दोनों के संयुक्त कार्य का परिणाम है। प्रकाश और आँख, के अभाव में चित्र का बनना और मष्तिष्क के बिना इसे देखना सम्भव नहीं है। अर्थात् देखने की प्रक्रिया प्रकाश, कॉर्निया, पुतली, लेंस, रेटिना, ऑप्टिक नर्व एवं मस्तिष्क की सहायता से होती है।

तथाकथित Third Eye में प्रकाश से लेके आप्टिक नर्व तक के भौतिक तंत्र की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये सब भौतिक देखने के भाग हैं। तृतीय चक्षु जागरण में आँख को बीच में से हटा दिया जाता है अतः Third eye vision में सीधा ब्रेन देखता है।

इसीलिए इसे Seeing without eyes भी कहते हैं। दिव्य चक्षुओं के जागरण के पश्चात् अब भौतिक चक्षुओं की आवश्यकता ही क्या है? साथ ही भौतिक चक्षुओं द्वारा देखने की जो सीमाएँ है वे भी समाप्त हो जाती हैं। अर्थात् अब प्रकाश की आवश्यकता भी नहीं है न ही इस बात की कि दृश्य वस्तु भौतिक चक्षुओं के समक्ष ही हो क्योंकि अब इन चर्म चक्षुओं का कोई उपयोग ही नहीं है। तभी तो आँखों को पट्टी से बन्द किया जा रहा है।

१. अतः अन्धे व्यक्ति या बालक बालिका भी इस प्रशिक्षण से देख सकते हैं।

२. अब प्रकाश की भी आवश्यकता नहीं है अतएव अंधेरे में भी देखा जा सकता है।

३. अब दिशा की भी सीमा नहीं है जो चर्म चक्षुओं के साथ है क्योंकि वे मुख के सामने होने से सीधी दिशा में ही देख सकते हैं। दिव्य चक्षुओं के साथ यह समस्या नहीं है। अतएव पीठ पीछे की वस्तु भी दिव्य चक्षुओं से देखी जा सकती है।

४.भौतिक आँख एवं ऑब्जेक्ट के मध्य अवरोध आने से जो प्रकाश वस्तु से आँख पर आ रहा था वह बाधित होने से वस्तु का दिखना बन्द हो जाता है परन्तु अब तीसरी आँख से देखने में प्रकाश का कोई कार्य ही नहीं

रह जाता अतः दीवार के पार या पीछे भी देखा जा सकता है।

यह जानना भी उचित होगा कि इस दिव्य शक्ति के सम्बन्ध में क्या भारत के इतिहास में कुछ मिलता है? अर्थात् भारत में Seeing without Eyes का वर्णन कहाँ-कहाँ मिलता है। इतिहास को टटोलने पर प्रथम तो शब्द भेदी बाण का वर्णन मिलता है जहाँ अदृश्य शिकार को आँखों से न देखने के बावजूद ध्वनि से सुनकर शरसंधान किया जाता है। अर्थात् जैसा विवेच्य विषय में बिना आँखों के त्वचा और घ्राण शक्ति का भी देखने में प्रयोग होता है वैसा ही शब्द भेदी विद्या में कानों से (देखा) जाता है, ऐसा भी कह सकते हैं। दो प्रमुख उदाहरण राजा दशरथ और श्रवण कुमार का तथा पृथ्वी राज चौहान के उद्धृत करते हैं।

श्रवण कुमार राजा दशरथ की दृष्टि से दूर था, अँधेरा भी था, कुल मिलाकर आँख पर पट्टी नहीं बाँधी तो भी दशरथ चर्मचक्षुओं से श्रवण कुमार को नहीं देख सकते थे। परन्तु जैसे ही श्रवण कुमार द्वारा बर्तन में नदी के पानी को भरने की आवाज हुयी, दशरथ ने तीर चला दिया जो निशाने पर लगा।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान के बारे में प्रसिद्ध है कि चन्द्रबरदाई ने मोहम्मद गौरी को सहमत किया कि शब्दभेदी बाण चलाने की जो विद्या पृथ्वीराज चौहान के पास है उसका प्रदर्शन उसको अवश्य देखना चाहिए। सुल्तान ने वैसा प्रबन्ध किया। स्वयं एक सिंहासन पर बैठ गया और पृथ्वीराज के हाथ में धनुष वाण दे दिए। तब, यद्यपि शब्दभेदी बाण चलाना पृथ्वीराज चौहान को सिद्ध था फिर भी एक अनुमान देने के लिए चन्द्रबरदाई ने बोला-

''चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण। ता ऊपर सुलतान है, मत चूके चौहान॥''

पृथ्वीराज को इस दोहे से एक अनुमान लग गया और जैसे ही सुल्तान गौरी ने "चलाओ" शब्द बोला, पृथ्वीराज चौहान ने बाण चलाकर के उसको समाप्त कर दिया। परन्तु यह विद्या कुछ दिनों अथवा कुछ महीनों में सिद्ध नहीं होती, वर्षों की घनघोर साधना और अभ्यास से ही सम्भव है और इसमें अलौकिक कुछ नहीं है।

संजय की दिव्य दृष्टि- महाभारत में वर्णन आता है कि संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान की गई थी जिसके आधार पर वह कुरुक्षेत्र की घटनाओं को धृतराष्ट्र को सुनाता रहता था। आर्य समाज के प्रायः विद्वान् इस घटना की अन्य प्रकार से विवेचना करते हैं और इसके पीछे तकनीक का चमत्कार मानते हैं, जो महाभारत काल में उपलब्ध भी थी। परन्तु अगर यह भी मान लिया जाए कि संजय के पास दिव्य दृष्टि थी तो निश्चित रूप से किसी तीन दिन के या एक मास के वर्कशॉप का परिणाम नहीं थी। केवल और केवल अष्टांग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) के माध्यम से ही विभूति पाद में वर्णित सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं।

कथित रूप से जापान और मलेशिया से जन्मा, आज भारतभर में फैला, आज का यह दिव्य चक्षु प्रकटीकरण कैसे सिद्ध होता है? इस बारे में जो जानकारी उपलब्ध हुयी है उसका सारांश यह है-

प्रमुख तकनीकें और प्रक्रियाएँ

१. ब्रेन वेव म्यूजिक/बाइनॉरल बीट्स, दोनों कानों में अलग-अलग आवृत्ति की ध्वनि दी जाती है, मस्तिष्क एक तीसरी काल्पनिक आवृत्ति बनाता है, Alpha, Theta तरंगें उत्पन्न होती हैं। यह अवस्था गहरे ध्यान जैसी होती है।
२. आँखों पर पट्टी+स्पर्श/गंध पहचान (Blind Fold Method), बच्चे की आँखों पर पट्टी बाँधकर रंग, अक्षर, चित्र पहचानवाए जाते हैं, दावा है कि तृतीय नेत्र (Pineal gland) सक्रिय होता है।
३. विजुअलाइजेशन+मेडिटेशन- आँखें बन्द करके मानसिक चित्र बनाना, श्वास-नियमन के साथ गहरी शिथिलता (Relaxation) लाना, अल्फा स्तर पर मस्तिष्क को लाना।

४. स्पिन टेक्निक (Spinning/Rotation)- कुछ केन्द्रों में बच्चों को तेजी से घुमाया जाता है। दावा है कि इससे वेस्टिबुलर सिस्टम और मिडब्रेन सक्रिय होते हैं। यह तकनीक खतरनाक मानी जाती है।

सामान्य रूप से मिडब्रेन एक्टिवेशन वर्कशॉप में आँख पर पट्टी, संगीत, ध्यान प्राण विद्या/त्राटक आदि का प्रयोग होता है, ऐसी जानकारी उपलब्ध होती है।

यद्यपि इस प्रकार के सभी प्रयोग विश्वभर में कभी भी वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित परिवेश में प्रमाणित नहीं हो पाए हैं, यह हम आगे आने वाले लेखों में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे फिर भी इनका उपयोग क्या है? अगर यह केवल दूसरों को अचंभित करने हेतु हैं तो व्यर्थ ही हैं। अगर इनसे स्मरण शक्ति वर्धन आदि कार्य होते हैं तब अवश्य लाभकारी कही जा सकती है। परन्तु यह दावा भी असिद्ध ही है।

जो दावा किया जाता है उसके अनुसार इस सिद्धि से स्मरण शक्ति (Memory) में वृद्धि एकाग्रता में सुधार, पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन, आत्मविश्वास बढ़ना, रचनात्मकता का विकास, अन्तर्ज्ञान (Intuition) बढ़ना, निर्णय लेने की क्षमता में सुधार, मानसिक शान्ति और तनाव में कमी, दाएँ और बाएँ मस्तिष्क का संतुलन, फोटोग्राफिक मेमोरी (Photographic Memory) अर्थात् पंडित गुरुदत्त की भाँति जो एक बार पढ़ लिया स्मृत हो गया (यद्यपि पंडित गुरदत्त ने मिडब्रेन एक्टिवेशन का कोर्स नहीं किया था), तेज सीखने की क्षमता, तथाकथित "सिक्स्थ सेंस" का विकास इस विद्या के फल बताये जाते हैं। हिसार के एक व्यक्ति हैं जो नाम के आगे डॉ. भी लगाते हैं वे इससे स्मरण शक्ति को पाँच गुना बढ़ा सकने का दावा करते हैं। परन्तु हर कोई जानता है कि ये दावे भ्रामक हैं।

हमारा निवेदन है कि विश्वभर में जितने भी व्यक्ति इस प्रकार की वर्कशाप आयोजित करते हैं, उन्हें सर्वप्रथम स्वयं आश्वस्त हो जाना चाहिए कि वे जो दावे कर रहे हैं वह सही हैं।

क्योंकि कहा गया है- **The first and worst of all frauds is to cheat one's self. All sin is easy after that - Pearl Bailey**

शार्क टेंक हो या के.बी.सी. अनेकत्र इस प्रकार के शो दिखाए जाते हैं, पर एक तार्किक मस्तिष्क इनसे सन्तुष्ट नहीं होता और यदि महर्षि दयानन्द की विचार सरणि में दीक्षित हो तो कदापि नहीं। इसके अतिरिक्त यह भी है कि विश्वभर के परीक्षण वीडियो भी उपलब्ध हैं जिनमें ऐसे प्रदर्शनकर्त्ता असफल हुए हैं। हमारे पास भी ऐसे वीडियो हैं जिनमें प्रदर्शनकर्त्ता असफल हुए। फिर भी मान्यजनों का यह मानना है कि यह सत्यविद्या है तो स्वयं ही इसकी परीक्षा कर लें परन्तु वह परीक्षा पूर्ण वैज्ञानिक व्यवस्थाओं के साथ हो। यह स्थितियाँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं-

१. **अँधेरे में टेस्ट करें,** अगर दिव्य चक्षु है तो उसे प्रकाश की आवश्यकता है ही नहीं, हम ऊपर विस्तार से विमर्श कर चुके हैं
२. **वस्तु के ऊपर कपड़ा ढ़कें** आँख पर आवश्यक नहीं। {प्रसिद्ध मेंटलिस्ट नकुल शिनाय का सुझाव}
३. **जो जन्मांध हैं उन पर यह दया करें** कि वे बिना भौतिक चक्षुओं के दुनिया देख सकें। यह मानव जाति पर अनन्य उपकार भी होगा।
३. **वस्तु और परीक्षार्थी के मध्य अवरोध खड़ा कर दें** क्योंकि हम पहले ही विमर्श कर चुके हैं कि दिव्य दृष्टि के मामले में अवरोध का कोई महत्त्व नहीं है।

४. **Blindfold कैसे करें?** सबसे पहले एक स्वीमिंग चश्मा लेकर उसे पूर्ण प्रकाशरोधी बना दें और Subject को पहना दें। फिर इसके ऊपर मोटे कपड़े की पट्टी बांधें।

५. अन्य प्रकार यह भी हो सकता है कि **सर से गर्दन तक का मोटे कपड़े का टोपा पहनावें।** जिसमें नाक के तथा मुँह के स्थान पर छिद्र हों।

६. यदि दिव्य दृष्टि है तो दिशा का बन्धन नहीं हो सकता। अतः पीठ पीछे पुस्तक रखकर पढ़वायें।

७. काफी कम प्रकाश में परीक्षण करें।

८. वीडियोग्राफी करावें तथा धीमी गति से रिप्ले में देखें।

९. यद्यपि दिव्यचक्षु प्रदर्शन में नाक और त्वचा का कोई भाग नहीं फिर भी अगर सूंघने की बात कही जाय तो वस्तु को सामने से न देकर पीठ पीछे जाकर दें।

हम इस लेख शृंखला को आगे बढ़ाएँगे इस आशा के साथ कि जो लोग तर्क को ऋषि मानते हैं, वे अवश्य इन लेखों को पढ़ने का कष्ट करें। सहमत होना आवश्यक नहीं निर्णय आपका है।

लेख का शीर्षक गांधारी विद्या है। गांधारी पट्टी के पार देख पाती थीं या नहीं कहा नहीं जा सकता। परन्तु एक विश्वव्यापी संगठन जिसके संस्थापक ने इसे तर्क, विज्ञान के रास्ते पर चलाया था, आज अन्धविश्वास के घनघोर अंधेरे साम्राज्य में, उसके कर्त्ता धर्त्ताओं ने गांधारी पट्टी का आश्रय ले लिया है ऐसा प्रतीत होता है।

यदि सचमुच आँखों पर पट्टी बाँधकर देखने की कोई दिव्य शक्ति है, तो उसका सबसे बड़ा प्रमाण मंच पर प्रदर्शन नहीं, किसी अंधे की आँखों में प्रकाश लौटाना होगा। चमत्कार का मूल्य तालियों से नहीं, मानवता के कल्याण से आँका जाता है। जो दिव्य दृष्टि का दावा करते हैं, वे पहले उन आँखों को संसार दिखाएँ जो जन्म से अंधकार में हैं। तभी वह प्रतिभा कौतूहल नहीं, मानवता के लिए वरदान कहलाएगी।

निवेदन हमारा – निर्णय आपका

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

चंद्रशेखर आजाद की मुखबिरी किसने की थी?

२७ फरवरी १९३१ के दिन, इलाहाबाद के आनन्द भवन में जवाहरलाल नेहरू से मिलने के बाद, चन्द्रशेखर आजाद अल्फ्रेड पार्क की ओर चले गए। उस समय भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सजा सुनाई जा चुकी थी। आजाद चाहते थे कि कांग्रेस नेतृत्व, विशेषकर गाँधी जी, वायसराय लॉर्ड इरविन पर दबाव डालें।

गणेश शंकर विद्यार्थी से सलाह लेने के बाद आजाद इलाहाबाद पहुँचे और जवाहरलाल नेहरू से मिले।हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए), जिसके आजाद एक प्रमुख सदस्य थे, आन्तरिक कलह का सामना कर रहा था, भगत सिंह को जेल में डाल दिया गया था और उन्हें फांसी से बचाने के प्रयास व्यर्थ साबित हो रहे थे। कहा जाता है कि जो उन्हें बचाने में समर्थ थे उन्हें इस विषय में कोई रुचि नहीं थी।

कई शोधकर्त्ताओं का मत है कि चन्द्रशेखर आजाद का सबसे बड़ा योगदान कोई एक साहसिक कार्रवाई नहीं, बल्कि काकोरी के बाद लगभग टूट चुके क्रान्तिकारी आन्दोलन को पुनर्जीवित करना था। यदि १९२७-३१ के बीच आजाद संगठन को न सम्भालते, तो सम्भवतः भगत सिंह और HSRA का इतिहास भी वैसा न बनता जैसा आज हम जानते हैं।

आजाद को भेष बदलने की कला में महारथ हासिल थी, जिसके कारण वह हमेशा अंग्रेजों से बचने में कामयाब रहे। रूप बदलने की उनकी असाधारण क्षमता के कारण उन्हें "बहुरूपिया" के नाम से जाना जाता था। काकोरी काण्ड के पश्चात् आप भूमिगत हो गये। परन्तु उद्देश्य प्राप्ति की दिशा में जो सम्भव था वे करते रहे।

यहाँ भी उन्होंने निशानेबाजी के अभ्यास को नहीं छोड़ा। आजाद की निशानेबाजी केवल किंवदंती नहीं थी। उनके साथियों के अनुसार वे पेड़ के एक पत्ते पर लगातार कई गोलियाँ दाग सकते थे और दूर स्थित छोटे लक्ष्य को भी भेद देते थे। इसी कारण संगठन में हथियारों के प्रशिक्षण की जिम्मेदारी अकसर उन्हीं पर रहती थी।

झाँसी में भूमिगत रहते समय उन्होंने केवल हथियार चलाना ही नहीं सीखा, बल्कि बुन्देलखंड मोटर गैराज में मोटरकार चलाना भी सीखा। क्रान्तिकारी गतिविधियों में त्वरित आवागमन के लिए यह एक रणनीतिक कौशल था। "पण्डित हरिशंकर ब्रह्मचारी" के रूप में रहते हुए वे धीमरपुरा गाँव के बच्चों को पढ़ाते थे। स्थानीय लोग उन्हें एक साधारण विद्वान्

ब्रह्मचारी समझते थे, जबकि वे पूरे उत्तर भारत में वांछित क्रान्तिकारी थे। शोधकर्त्ता विश्वनाथ वैशम्पायन के संस्मरणों से पता चलता है कि आजाद ने भगत सिंह को लाहौर जेल से छुड़ाने की एक विस्तृत योजना बनाई थी। इसके लिए किराये का बंगला लिया गया, बमों का परीक्षण हुआ, गुप्त संकेत तय किए गए और पूरी टीम तैयार थी। लेकिन भगत सिंह स्वयं भागना नहीं चाहते थे, इसलिए योजना सफल नहीं हो सकी।

आजाद का संकल्प था कि जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आयेंगे। किन्तु चन्द्रशेखर आजाद अपने विश्वासघाती मित्र वीरभद्र तिवारी को नहीं पहचान सके। चन्द्रशेखर आजाद के पुराने मित्र वीरभद्र तिवारी ने उन्हें अल्फ्रेड पार्क जाते हुए देखा और पुलिस अधिकारी शम्भूनाथ को चन्द्रशेखर आजाद की अल्फ्रेड पार्क में मौजूदगी के बारे में सूचित किया। इसका खुलासा धर्मेन्द्र गौड़ नाम के एक अधिकारी की निजी डायरी से हुआ है, जो आजाद को घेरने वाली सशस्त्र सेना का हिस्सा थे। धर्मेन्द्र गौड़ की डायरी में वीरभद्र तिवारी को चन्द्रशेखर आजाद की मौत के मामले में गद्दार बताया गया है।

'आजाद की पिस्तौल और उनका गद्दार साथी' शीर्षक वाली डायरी एक मूल्यवान ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसमें आजाद को पकड़ने तक की घटनाओं का विवरण दिया गया है। गौड़ के विवरण के अनुसार, आनन्द भवन में नेहरू से मुलाकात के बाद आजाद सुबह ९ बजे सुखदेव राज के साथ अल्फ्रेड पार्क पहुँचे। पार्क में आजाद की मौजूदगी के बारे में वीरभद्र तिवारी ने पुलिस को बताया जिसके बाद ८० सशस्त्र पुलिसकर्मी तेजी से वहाँ पहुँचे और आजाद के प्रतिक्रिया करने से पहले ही उसे घेर लिया।

आजाद ने सुखदेव राज को वहाँ से विदा कर दिया तथा स्वयं अंग्रेजों से मोर्चा लेने लगे। परन्तु सीमित शस्त्र, सीमित गोलियाँ। आजाद के पास केवल एक गोली बची थी। अब उन्हें फैसला करना था कि वह गोली अपने ऊपर चला कर अपने को समाप्त कर अंग्रेजों के हाथों में जीवित न आकर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करें या गिरफ्तार होकर आंग्ल जजों के पूर्व निश्चित निर्णय को सुनने की प्रतीक्षा करें। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना निश्चित किया और शहादत प्राप्त की।

जिस पेड़ की ओट लेकर आजाद, अंग्रेजों की फायरिंग का जवाब दे रहे थे, उसे अंग्रेजों ने आजाद की मौत के बाद कटवा दिया था। दरअसल इस पेड़ पर लोगों ने कई जगह आजाद लिख दिया था और लोग यहाँ की मिट्टी भी उठा ले गए थे। लोगों का मजमा इस जगह पर लगने लगा था और लोग फूल-मालाओं के साथ इस जगह की दीप जलाकर आरती करने लगे थे। अंग्रेजों को ये बात रास नहीं

आई और उन्होंने रातों-रात उस पेड़ को जड़ से काट दिया और उसे फिंकवा दिया। इसके बाद अक्टूबर, १९३९ में उसी जगह पर बाबा राघवदास ने एक जामुन के पेड़ को लगाया था। बाबा राघवदास एक सन्त, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और राजनेता थे। उन्हें "पूर्वांचल का गाँधी" कहा जाता है। उन्होंने १९२० में कांग्रेस में शामिल होकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और कई बार जेल गए।

उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य- चन्द्रशेखर आजाद की शहादत स्थल पर १९३९ में जामुन का पेड़ लगाना था, जो आज भी आजाद की याद को अमर रखता है। माँ भारती के इस लाडले सपूत को हम राष्ट्र मन्दिर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर की ओर से शत-शत नमन करते हैं।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग

मांसाहार : मनुष्य की क्रूरता का कारण

आज संसार में अधिकांश लोग मांसाहार की ओर बढ़ चुके हैं। विश्व स्तर पर मांस-उपभोग निरन्तर बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष करोड़ों टन मांस का उत्पादन किया जाता है। भारत में भी बड़ी संख्या (71% से 75%) में लोग मांस, मछली और अण्डों का सेवन करने लगे हैं। शहरीकरण, फास्ट फूड संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली ने इस प्रवृत्ति को और बढ़ाया है। जो व्यक्ति तामसिक और हिंसात्मक भोजन करेगा, उसके विचार भी वैसे ही हो जायेंगे। ऐसा मत भारतीय दार्शनिक परम्पराओं, योगशास्त्र और आयुर्वेद में व्यक्त किया गया है। यदि समाज का नेतृत्व करने वाले, नीति बनाने वाले और आदर्श माने जाने वाले लोग स्वयं हिंसात्मक भोजन और भोगवादी जीवनशैली अपनाएँगे, तो उनके विचारों का प्रभाव भी समाज पर पड़ेगा।

लोग किसी नेता, अभिनेता, वैज्ञानिक या प्रसिद्ध व्यक्ति से प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु बहुत कम लोग यह विचार करते हैं कि उसका व्यक्तिगत जीवन कैसा है, उसका आहार कैसा है और उसका आचरण कैसा है। यहाँ तक कि अनेक धार्मिक लोग भी इस विषय पर गम्भीरता से विचार नहीं करते। यदि कोई व्यक्ति निरन्तर हिंसा से प्राप्त भोजन करेगा, तो उसके भीतर हिंसा, क्रूरता और असन्तुलन की प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी ही। आयुर्वेद में भोजन को सात्विक, राजसिक और तामसिक श्रेणियों में बाँटा गया है, जहाँ तामसिक भोजन को जड़ता, असन्तुलन और मानसिक अशान्ति से जोड़ा गया है। मांसाहार को मनुष्य के लिए अभक्ष्य कहा है, यह कभी मनुष्य का भोजन रहा ही नहीं, न ही हमारा शरीर मांसाहार के लिए डिजाइन किया गया है।

आधुनिक मनोविज्ञान में भी भोजन और मानसिक अवस्था के सम्बन्ध पर अनेक अध्ययन हुए हैं। कुछ शोधों में पाया गया कि भोजन का सम्बन्ध मनोदशा, आक्रामकता, तनाव और व्यवहार से है। दुनिया में 'गट-ब्रेन एक्सिस' अर्थात् आँत और मस्तिष्क के सम्बन्ध पर व्यापक शोध चल रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार भोजन शरीर के हार्मोन्स, माइक्रोबायोम और न्यूरो-रासायनिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है, जिनका प्रभाव मानसिक अवस्था पर भी पड़ता है।

जब किसी जीव की हत्या होती है, तब केवल उसके शरीर को ही कष्ट नहीं होता, बल्कि उससे पीड़ा और भय की तरंगें उत्पन्न होती हैं, जिन्हें वैज्ञानिक पेन वेव्स कहते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि पशुओं में भय, तनाव और पीड़ा की जैविक प्रतिक्रियाएँ होती हैं। वध से पहले अनेक पशुओं के शरीर में कोर्टिसोल जैसे तनाव-सम्बन्धी हार्मोनों का स्तर बढ़ जाता है। मरने वाले जीव को पीड़ा की अनुभूति होती है और मारने वाले के भीतर से क्रोध तथा क्रूरता की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार मांसाहार को केवल भोजन का विषय नहीं,

बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी असर डालने वाला विषय माना गया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अन्तर्गत कार्य करने वाली International Agency for Research on Cancer (IARC) ने २०१५ में प्रोसेस्ड मीट को 'कार्सिनोजेनिक' अर्थात् कैंसरकारी श्रेणी में रखा था। अनेक शोधों में अत्यधिक मांसाहार को हृदय रोग, मोटापा, उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी समस्याओं का कारण पाया गया है। इसके विपरीत वनस्पति आधारित भोजन को अनेक स्वास्थ्य विशेषज्ञ सन्तुलित और लाभकारी मानते हैं।

समुद्रों और प्राकृतिक सन्तुलन की चर्चा करें, तो समुद्री जीव भोजन नहीं हैं। वे समुद्र के सन्तुलन को बनाए

रखने में भूमिका निभाते हैं। मछलियाँ और अन्य जीव समुद्री जल में निरन्तर गति करते रहते हैं, जिससे समुद्र की जैविक प्रणाली और खाद्य-शृंखला संतुलित रहती है। UN की रिपोर्टों के अनुसार अत्यधिक मत्स्य-शिकार (Overfishing) के कारण विश्व की अनेक समुद्री प्रजातियाँ संकट में पहुँच चुकी हैं। कुछ क्षेत्रों में समुद्री जैव-विविधता में तीव्र गिरावट दर्ज की गई है। प्लास्टिक प्रदूषण, तेल रिसाव और औद्योगिक कचरे ने समुद्रों की स्थिति को और अधिक गम्भीर बना दिया है।

किन्तु जब मनुष्य समुद्री जीवों को बड़े पैमाने पर मारकर खाने लगता है, तो समुद्र का स्वाभाविक सन्तुलन प्रभावित होता है। समुद्री जल प्रदूषित होता है और जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ने लगता है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यदि अत्यधिक मत्स्य-शिकार इसी प्रकार चलता रहा, तो भविष्य में समुद्री पारिस्थितिकी तन्त्र पर गम्भीर प्रभाव पड़ सकते हैं। व्हेल, शार्क और बड़ी मछलियों की संख्या में कमी समुद्री खाद्य-शृंखला को प्रभावित करती है।

'नील क्रान्ति' और 'पिंक क्रान्ति' जैसी योजनाओं ने मछली और मांस उत्पादन को बढ़ावा दिया। इसे आर्थिक विकास और आधुनिकता का प्रतीक माना गया। भारत में पोल्ट्री उद्योग और मत्स्य उद्योग तीव्र गति से बढ़े हैं। किन्तु जिस व्यवस्था का आधार हिंसा और भोग है, वह अन्ततः रोग और असन्तुलन को बढ़ाती है।

जब मनुष्य किसी जीव को केवल भक्ष्य के रूप में देखने लगता है, तब उसके भीतर संवेदनशीलता कम होने लगती है। इसके विपरीत यदि वह सम्पूर्ण सृष्टि को ईश्वर का परिवार माने, तो वह किसी भी जीव को उपभोग की वस्तु नहीं समझेगा। तब पशु-पक्षी और अन्य प्राणी उसके साथी और सहचर होंगे। भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसे सिद्धान्त इसी व्यापक संवेदनशीलता को व्यक्त करते हैं।

मांसाहार मानसिक अशान्ति, क्रूरता और वैचारिक प्रदूषण से सीधे-सीधे जुड़ा हुआ है। ईर्ष्या, क्रोध, हिंसा और पीड़ा की भावनाएँ वातावरण और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यदि समाज का बड़ा भाग हिंसा-आधारित भोजन और जीवनशैली अपनाएगा, तो उसका प्रभाव समाज के विचारों और व्यवहार पर भी पड़ेगा। आज विश्व में बढ़ती हुई हिंसा, मानसिक तनाव, अवसाद और असन्तुलित जीवनशैली के लिए भोगवादी संस्कृति ही उत्तरदायी है।

इसीलिए सादगी, अहिंसा और प्रकृति-सम्मत जीवन को अधिक सन्तुलित और शान्तिपूर्ण जीवन का आधार बताया गया। यदि मनुष्य वास्तव में शान्ति और संतुलन चाहता है, तो उसे भोजन और जीवनशैली के विषय में भी गम्भीरता से विचार करना होगा। मात्र बाह्य प्रगति पर्याप्त नहीं है; आन्तरिक संवेदनशीलता, करुणा और सन्तुलन भी उतने ही आवश्यक हैं।

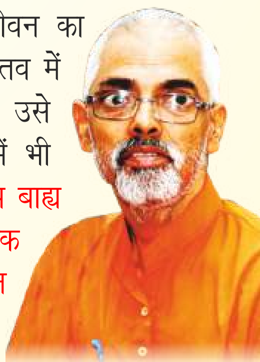

- आचार्य अग्निव्रत
प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जिला- जालोर (राज.)

पण्डित रतिराम जी शर्मा का जन्म १२ जुलाई १९२८ में हरियाणा के भिवानी जिले के ग्राम देवला में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा और संस्कार पूज्य पिता श्री गौरीदत्त शर्मा और माता श्रीमती हरबाई जी से प्राप्त हुए। बचपन से ही आर्य समाज के सत्संगों में भाग लेने की उनकी प्रवृत्ति ने उन्हें वैदिक धर्म की ओर अग्रसर किया। अपने व्यक्तिगत जीवन में भोजन की पवित्रता और अर्थ-शुचिता (आर्थिक ईमानदारी) के उच्च आदर्शों को उन्होंने न केवल स्वीकार किया, बल्कि उन्हें अपने दिन-प्रतिदिन के व्यवहार का हिस्सा बनाया। इस नैतिकता को उन्होंने अपना 'स्वधर्म' माना और कठिन परिस्थितियों में भी इससे कभी समझौता नहीं किया।

व्यावसायिक जीवन में आदर्शवादिता

सिलीगुड़ी को अपनी कर्मभूमि बनाते हुए उन्होंने १९६० में 'राजभण्डार' की शुरुआत की। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक व्यवसायी भी यदि सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चले, तो समाज में अत्यधिक सम्मान और विश्वसनीयता प्राप्त कर सकता है। उनकी व्यापारिक सफलता का मूल मंत्र केवल मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना था। इसी साख के कारण वे बहुत कम समय में एक प्रतिष्ठित समाजसेवी के रूप में उभरे।

गुरुकुल प्रणाली और शिक्षा का उन्नयन

पण्डित रतिराम जी का सबसे विशेष योगदान वैदिक विद्वानों के निर्माण की दिशा में रहा। उनका यह दृढ़ मत था कि समाज के सुचारू संचालन के लिए योग्य उपदेशकों, प्रचारकों, लेखकों और पत्रकारों की आवश्यकता है, जिनका निर्माण केवल गुरुकुलों के माध्यम से ही हो सकता है।

प्रमुख कार्य एवं योगदान

- संस्थागत योगदानः सिलीगुड़ी में ऋषि भवन और वैदिक शिक्षक प्रतिष्ठान की स्थापना।
- प्रेरणाः विद्यार्थियों को गुरुकुलों में पढ़ने हेतु आर्थिक चिन्ता से मुक्त रहकर प्रोत्साहित करना।
- परिवारः अपने स्वयं के पुत्रों को गुरुकुलों में शिक्षा दिलाकर एक आदर्श प्रस्तुत किया।

उन्होंने गुरुकुलों के प्रबन्धन के लिए एक व्यवस्थित कार्ययोजना बनाई, ताकि विद्वान् अपनी आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त होकर समाज में वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य समय दे सकें।

पारिवारिक और व्यक्तिगत संस्कार

महर्षि दयानन्द के अनुयायी के रूप में, उन्होंने पंचमहायज्ञों को अपने जीवन का अनिवार्य अंग माना। उनका मानना था कि जो परिवार इन वैदिक परम्पराओं का पालन नहीं करता, वह पारिवारिक कलह और कुरीतियों का शिकार हो जाता है। उनके स्वयं के जीवन और उनके पुत्र-पौत्रों के जीवन का अनुशासित और धर्मपरायण स्वरूप इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने अपने पारिवारिक कर्तव्यों को कितने समर्पण से निभाया।

पण्डित रतिराम जी का व्यक्तित्व एक ऐसे 'कर्मयोगी' का था, जिन्होंने अपने जीवन को समाज और धर्म की वेदी पर अर्पित कर दिया। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक के समान है, जो यह सिखाता है कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी मनुष्य किस प्रकार धर्म, अर्थ और समाज सेवा के बीच एक आदर्श सन्तुलन बना सकता है। - मूल आलेख (डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई)

यज्ञ एवं शोध

यज्ञ अथवा अग्निहोत्र आज केवल धार्मिक कर्मकांड तक ही सीमित नहीं रह गया है। यह शोध का विषय भी बन गया है। 'अमेरिका' में यज्ञ पर शोध हुए हैं और प्रायोगिक परीक्षणों से पाया गया है कि वृष्टि, जल एवं वायु की शुद्धि, पर्यावरण संतुलन एवं रोग निवारण में यज्ञ की अहम भूमिका है।

चेचक के टीके के आविष्कारक डॉ. हैफकिन का कथन है 'घी जलाने से रोग के कीटाणु मर जाते हैं।' फ्रांस के वैज्ञानिक प्रो. ट्रिलबिर्ट कहते हैं, "जली हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे टी. बी., चेचक, हैजा आदि बीमारियाँ तुरन्त नष्ट हो जाती हैं।" अंग्रेजी शासनकाल में मद्रास के सेनिटरी कमिश्नर डॉ. कर्नल किंग आई.एम.एस. ने कहा, "घी और चावल में केसर मिलाकर अग्नि में जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है।"

आज अत्यधिक धूम्रपान, अंधाधुंध पेट्रोलियम पदार्थों के प्रयोग से बढ़ता प्रदूषण तथा विषैली गैसें चिन्ता का विषय हैं, जिसका प्रतिकार यज्ञ है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश ने भी कहा है, "यज्ञ में बहुत स्वास्थ्यप्रद उपयोगी ओजोन तथा फारमेल्डिहाइड गैसें भी उत्पन्न होती हैं। ओजोन ऑक्सीजन से भी ज्यादा लाभकारी एवं स्वास्थ्यवर्द्धक है। यह ठोस रूप में प्रायः समुद्र के किनारे पाई जाती है, जिसे हम अपने घर में ही यज्ञ से पा सकते हैं।"

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वैज्ञानिक आधार पर शोध करके सामग्री व समिधाओं का चयन किया था। जैसे-बड़, पीपल, आम, बिल्व, पलाश, शमी, गूलर, अशोक, पारिजात, आंवला व मौलश्री वृक्षों के समिधाओं का घी सहित यज्ञ-हवन में विधान किया था, जो आज विज्ञान सम्मत है, क्योंकि यज्ञ का उद्देश्य पंचभूतों की शुद्धि है, जो हमारे पर्यावरण का अंग हैं। यज्ञ का वैदिक उद्देश्य भी पर्यावरण शुद्धि एवं संतुलन है। यज्ञ-विज्ञान का नियम है कि जब कोई पदार्थ अग्नि में डाला जाता है तो अग्नि उस पदार्थ के स्थूल रूप को तोड़कर सूक्ष्म बना देती है। इसलिए यजुर्वेद में अग्नि को 'धूरसि' कहा गया है।

महर्षियों ने इसका अर्थ दिया है कि भौतिक अग्नि पदार्थों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने पर उनकी क्रियाशीलता

उतनी ही बढ़ जाती है। यह एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है। जैसे अणु से सूक्ष्म परमाणु और परमाणु से सूक्ष्म इलेक्ट्रान होता है। अतः ये क्रमानुसार एक-दूसरे से ज्यादा क्रियाशील एवं गतिशील हैं। यज्ञ में यह सिद्धान्त एक साथ काम करते हैं। यज्ञ में डाली गई समिधा अग्नि द्वारा विघटति होकर सूक्ष्म बनती है, वहीं दूसरी तरफ वही सूक्ष्म पदार्थ अधिक क्रियाशील एवं प्रभावी होकर विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। एक चम्मच घी एक आदमी खाता है तो उसकी लाभ-हानि सिर्फ खाने वाले आदमी तक ही सीमित है, परन्तु यज्ञ कुंड में एक चम्मच घी अनेक व्यक्तियों

को लाभ पहुँचाता है। जिस घर में हवन होता है, यज्ञाग्नि के प्रभाव से वहाँ की वायु गर्म होकर हल्की होकर फैलने लगती है और उस खाली स्थान में यज्ञ से उत्पन्न शुद्ध वायु वहाँ पहुँच जाती है। इसमें विसरणशीलता का वैज्ञानिक नियम काम करता है। इसलिए हम देखते हैं कि किसी घर या कोई स्थान, जहाँ यज्ञ हुआ रहता है, वहाँ कई दिनों तक समिधा की खुशबू विद्यमान रहती है। प्रदूषण आज की विकट समस्या है। इसका कारण एक तो हमारी भोगवती प्रवृत्ति और दूसरा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी है। आज का बढ़ता तापमान, औद्योगीकरण, वृक्षों की कटाई, पॉलीथीन का उपयोग, जल, वायु, मृदा प्रदूषण चरमावस्था में हैं, जिसके कारण प्राणियों की रक्षा के लिए संरचित हमारे रक्षा कवच, ओजोन परत में छेद होने लगा है।

उद्योगों, कल-कारखानों से गंदगी निकलकर पृथ्वी को दूषित कर रहे हैं। बेतरतीब वाहनों से निकलता धुआँ, अर्थात् कार्बन मोनो-ऑक्साइड गैस से आँखों में जलन, सिर दर्द, अस्थमा, टी.बी. आदि से लोग परेशान हैं। ऐसा लगता है सम्पूर्ण जैवमंडल विनष्ट हो रहा है। **'ओ३म् पूर्णात् पूर्णमिदं'** को आधुनिक स्वार्थी, भोगलिप्सा में लिप्त मानव अनसुना करके अपने आपको ही मारने पर तुला है। ओजोन परत में हुए छेद से सूर्य की प्रचण्ड गर्मी, विध्वंसकारी पराबैंगनी किरणों के रूप में चर्म रोग, कैंसर, आँखों से अंधा होना आदि का संवाहक बन गई है। ऐसे में इस समस्या के समाधान हेतु प्रयासों के साथ क्या हम एक छोटा-सा प्रयास 'यज्ञ' के रूप में नहीं कर सकते? आइए आज से ही हम सब सामूहिक यज्ञ का संकल्प लें।

- डॉ. अनिल योगाचार्य
३०२/४, रामनगर, सेक्टर- ८, गुरुग्राम (हरियाणा)
चलभाष- ८३७६९०००१२

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

तीर्थयात्रा साध्य नहीं साधन है मनुष्य की अन्तर्यात्रा का

यदि अर्थ का थोड़ा विस्तार करें तो हर उपयोगी या प्रेरणादायक स्थल तीर्थ की कोटि में ही आता है। नेहरु जी ने स्वतंत्र भारत में लगने वाले बड़े-बड़े उद्योगों और बाँधों को आधुनिक भारत के तीर्थ बतलाया। हर विद्यालय, हर शैक्षणिक संस्थान, तीर्थस्थल ही तो है। भीष्म साहनी राजस्थान के एक गाँव के स्वावलम्बन केन्द्र की यात्रा पर जाते हैं और जो रिपोर्ताज प्रस्तुत करते हैं उसको नाम देते हैं "राजस्थान के एक गाँव की तीर्थयात्रा।" मैडलीन स्लेड अर्थात् मीराबेन जो गाँधीजी की शिष्या थीं उन्होंनें अपनी आत्मकथा लिखी और उसका नाम दिया "द स्पिरिट्स पिल्ग्रिमेज" अर्थात् "एक आत्मा की तीर्थयात्रा।"

यदि इस शीर्षक का विश्लेषण करें तो भी तीर्थ के नये अर्थ का ही उद्घाटन होता है। यात्रा या तीर्थयात्रा भौतिक शरीर की नहीं अपितु मन द्वारा आत्मा की होती है। यहाँ तीर्थयात्रा किसी स्थान विशेष की नहीं सिद्धान्तों की है। गाँधीजी के सिद्धान्तों को आत्मसात करने की यात्रा का वर्णन है। कोई शरीर गाँधीजी के सिद्धान्तों को समझने की यात्रा नहीं कर सकता।

बहुत गहराई है शीर्षक में।

डॉ. राजा रमन्ना जो प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा केन्द्रीय मंत्री भी थे। अपनी आत्मकथा को "ईयर्स ऑफ पिल्ग्रिमेज" नाम दिया। तीर्थयात्रा के वर्ष। अपने वैज्ञानिक अनुसन्धानों को तीर्थयात्रा मानते थे- डॉ. रमन्ना। हर सिद्धान्त, हर अनुसन्धान तीर्थयात्रा ही है। भारतीय मूल के विदेशी जब भारत आते हैं तो वे अपनी यात्रा को तीर्थयात्रा से कम नहीं मानते। शहरों में रहने वाले लोग जब अपने पूर्वजों के मूल गाँवों में जाते हैं तो उसे तीर्थयात्रा का दर्जा ही देते हैं। नदियों के घाट ही नहीं उनके उद्गम स्थल भी तीर्थ ही हैं। इसी तरह व्यक्ति जब तक अपने उद्गम या अन्तर से नहीं जुड़ता उसकी यात्रा अधूरी ही मानी जाती है।

महापुरुषों के जन्म स्थान भी तीर्थ ही कहलाते हैं। अयोध्या और मथुरा तीर्थ हैं क्योंकि राम और कृष्ण यहाँ जन्मे थे। लुंबिनी भी एक तीर्थ है। राम, कृष्ण अथवा बुद्ध जहाँ-जहाँ गए तीर्थों की सृष्टि होती गई। तीनों प्रकार के तीर्थ अर्थात् जंगम, मानस और स्थावर इन महापुरुषों में समाहित हैं। गाँधी में भी हैं। जहाँ पैदा हुए, जहाँ गए, जहाँ कैद रहे सभी तीर्थ बन गए।

नानक देव या दूसरे गुरु जहाँ-जहाँ गए उनकी स्मृति में गुरुद्वारे बने। गुरुद्वारे तीर्थ का ही प्रतीक हैं। इन्हें तीर्थ ही मान लिया गया। लेकिन वास्तविक तीर्थ तो गुरु और उनकी वाणियाँ हैं।

आत्माविहीन या जड़ शरीर की यात्रा तो कोई यात्रा नहीं। चेतन शरीर की यात्रा ही सार्थक यात्रा है लेकिन शरीर की जड़ता समाप्त हो जाने पर वास्तव

में बाहरी यात्रा की जरूरत ही नहीं रहती। यह मानस-यात्रा सबसे महत्वपूर्ण यात्रा है। बाह्य यात्रा की अपेक्षा आन्तरिक यात्रा ज्यादा महत्वपूर्ण और उपयोगी है। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि आंतरिक यात्रा या मानस-यात्रा इतनी महत्वपूर्ण है तो बाह्य यात्रा का क्या प्रयोजन हो सकता है?

ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है-

कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठन् त्रेता भवति, कृतं संपद्यते चरन्।।
चरैवेति, चरैवेति।। - ऐतरेय. ६/४

अर्थात् जब मनुष्य सोया रहता है, वह कलियुग में होता है। जब वह बैठ जाता है तब द्वापर में होता है, जब उठ खड़ा होता है तब त्रेतायुग में तथा जब चलने लगता है वह सतयुग को प्राप्त करता है। अतः चलते रहो, चलते रहो। यात्रा सतयुग के तुल्य है क्योंकि चलना ही जीवन है रुकना मृत्यु है। लेकिन हम कहाँ जा रहे हैं यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं। एक व्यक्ति वो है जो काबा या काशी जाकर भी मुक्त नहीं होता और एक वो है जिसकी जेलयात्रा भी तीर्थ की सृष्टि में सहायक होती है। यात्रा महत्वपूर्ण है लेकिन हमारा लक्ष्य यात्रा नहीं। तीर्थयात्रा लक्ष्य या उद्देश्य नहीं ये तो उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है। उद्देश्य तो आन्तरिक यात्रा है। यदि आन्तरिक यात्रा नहीं होती तो तथाकथित तीर्थों की यात्रा निरर्थक है।

एक बार पार्वती ने शिव से जिज्ञासा की कि लोग कुछ स्थानों को पवित्र और कुछ को अपवित्र मानते हैं और पवित्र तीर्थ स्थलों के दर्शनों के लिए पूरी दुनिया में घूमते हैं। तीर्थाटन का सही पथ क्या है?

इस पर शिव ने कहा कि हमारे शरीर में आत्मा अथवा चेतना के रूप में परम सत्ता ही विद्यमान है अतः अपनी आत्मा, चेतना अथवा अपने 'स्व' को जानना ही सबसे अच्छा तीर्थाटन है। आत्मा न केवल सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है अपितु केवल आत्मा ही वास्तविक तीर्थ है। आत्मस्थ होने का तात्पर्य मन की निर्मलता के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं।

यात्रा की बात करते हैं तो कबीर याद आते हैं। दरअसल कबीर और यात्रा एक दूसरे के पर्याय हैं। कबीर की मानस-यात्रा में यात्रा अथवा देशाटन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन कबीर एक स्थान पर ठहरे नहीं। न बाहर ही ठहरे न भीतर ही ठहरे। ठहराव जड़ता है। कबीर चलते रहे, घूमते रहे, देखते रहे। जितना बाहर देखते उतना ही अन्दर देखते। कबीर सीखते रहे और बदलते रहे। सीखने वाला जड़ नहीं होता। कबीर किसी मत किसी स्थान से बंधे नहीं चलते चले गए। इसीलिए अन्दर से भी मुक्त हो गए। बाह्ययात्रा अन्तर्यात्रा या मानसयात्रा में सहायक ही हुई। देशाटन के अभाव में अधूरी है अन्तर्यात्रा और अन्तर्यात्रा नहीं की तो निरर्थक है देशाटन। अन्तर्यात्रा ही तो है जो भ्रमण को तीर्थयात्रा बनाने में सक्षम है। कबीर के ही शब्दों में-

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर,
पाछे-पाछे हरि फिरै कहत कबीर कबीर।

संत रैदास ने तो लकड़ी की परात में भरे उस पानी

को ही गंगा मान लिया जिसमें जूतियाँ बनाने से पहले वो चमड़े को भिगोते थे पर एक शर्त थी और शर्त ये कि- **मन चंगा तो कठौती में गंगा।**

नरसी ने भी कहा है-

मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
राम नाम शुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे।।

कहने का तात्पर्य ये है कि मन की निर्मलता के बिना, नकारात्मक भावों के विसर्जन के बिना तीर्थयात्रा नहीं होती। जिस क्षण हम नकारात्मक भावों से मुक्त होना प्रारम्भ कर देते हैं उसी क्षण हमारी तीर्थयात्रा प्रारम्भ

हो जाती है।

आज की तीर्थयात्रा का स्वरूप भी देखिए। पहले लोग आटा-दाल, घी-शक्कर बाँधकर तीर्थयात्रा के लिए चलते थे कब लौटेंगे या नहीं लौटेंगे ये भी पता नहीं होता था। अब वीकएंड पर जाते हैं। पहले हवाई जहाज से फिर हेलिकॉप्टर से। जब लौटते हैं तो विश्वविजेता की तरह। हम तीर्थयात्रा पर थोड़े ही निकलते हैं हम तो विश्वविजय करने, इस पूरे संसार को अपने अधीन करने निकलते हैं। लोगों पर अपनी धाक जमाकर, अपने अहंकार को और अधिक पुष्ट करने निकलते हैं। अश्वमेध यज्ञ कर चक्रवर्ती सम्राट बनने निकलते हैं। अश्वमेध यज्ञ आपकी क्षमता का प्रदर्शन है जबकि तीर्थयात्रा आपकी क्षमता, आपकी आन्तरिक यात्रा का मूल्यांकन। जिस दिन अपनी क्षमता, अपनी आन्तरिक यात्रा का मूल्यांकन करना सीख जाएँगे उसी दिन आप की तीर्थयात्रा का प्रारम्भ हो जाएगा।

ए. डी. 106 सी., पीतम पुरा
दिल्ली - 110034, चलभाष- 9555622323

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
BHIM UPI

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

जीवन अमृत

गतांक से आगे........

ठीक यही स्थिति एक सफल सुखी जीवन जीने के लिए आवश्यक है। जीवन में सद्गुणों को, जो सुख के कारण हैं अपनाना और दुर्गुणों को जो दुःख के कारण हैं त्यागना महत्वपूर्ण है। इसको समझकर जीवन में अपनाने से अद्भुत लाभ मिलेगा, जीवन की सभी समस्याओं का निदान स्वतः हो जाएगा, जीवन सुख, शान्ति से भरा हुआ सरल, सफल और आनन्दकारी होगा और यही जीवन का अमृत है। यह कैसे सम्भव होगा आइए इस पर विचार करते हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को यजुर्वेद का एक मंत्र बहुत प्रिय था। उसका अनेक स्थानों पर उन्होंने अपने लेखन या व्याख्यानों में उपयोग किया है। मंत्र में उपरोक्त उल्लिखित विचारों का सन्देश मिलता है।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ – यजुर्वेद ३०/३

अर्थ– हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, शुद्ध स्वरूप प्रभो! आप हमारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म और स्वभाव हैं वे हमें प्राप्त कराइए। इस मंत्र में दो बातों का सन्देश दिया गया।

मंत्र में पहले दुर्गुण, दुर्व्यसनों को दूर करने की प्रार्थना परमात्मा से की गई, फिर सुविचार कल्याणकारी गुण, कर्म प्राप्ति की कामना की गई। मंत्र में ऐसा क्यों कहा इस पर थोड़ा ध्यान दें। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति किसी पात्र में दूध लेने जाता है किन्तु उस पात्र

में पहले से ही कुछ कचरा पड़ा हुआ है, तो ऐसे पात्र में कोई भी समझदार व्यक्ति दूध नहीं लेगा। पहले वह ऐसे पात्र में पड़े कचरे को हटाकर दूध को क्षति पहुँचाने वाली वस्तु को साफ करेगा, फिर दूध लेगा। बिना पात्र स्वच्छ किए यदि दूध ले भी लेता तो दूध विकृत हो जाता उसका दूध के रूप में उपयोग नहीं होता। इसी प्रकार जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा आदि विकार हमारे साथ यदि जुड़े

रहते हैं, तो उनके प्रभाव से किन्हीं कल्याणकारी विचारों को जीवन में स्थान देना बड़ा कठिन होगा। अन्धेरा और उजाला दोनों एक साथ नहीं रह सकते। साधु और शैतान वृत्ति एक साथ नहीं रहती। यही स्थिति सुविचार और कुविचारों की है।

बुरे विचारों के रहते हुए अच्छे विचारों की स्थिति ऐसी होती है जैसे गर्म तवे पर शीतल पानी की कुछ

बूंद डाली जाए तो वह पानी निरर्थक होकर भाप बन कर उड़ जाएगा। वह तवे को शीतलता प्रदान नहीं कर पाता। इसलिए सुविचार पाने के लिए पहले दुर्गुणों को दूर करना जरूरी है। जो व्यक्ति जीवन के वास्तविक महत्व को समझकर जीवन जीते हैं सही अर्थों में उन्हें ही जीवन जीना आया, ऐसा मानना चाहिए। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति व सुख जो बाहरी है उसे तो पशु-पक्षी भी अपनी बुद्धि और सामर्थ्य से प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु जीवन की सुगन्धि तो आनन्द है, वह तो कल्याकारी पवित्र बुद्धि, शुभ चिन्तन व शुभ कर्मों को जीवन में अपनाने से प्राप्त होता है, यही मानव जीवन की उपलब्धि है।

आनन्द आन्तरिक विषय है, जिसका सम्बन्ध हमारे पवित्र कर्मों व शुद्ध आचरण से है। और यह भी सत्य है कि इसे केवल मानव चोले को पाकर ही प्राप्त किया जा सकता है, यही इस जीवन की विशेषता है।

सुख-दुःख, उत्थान और पतन हमारे पुरुषार्थ और पूर्व संचित कर्म के प्रभाव हैं, जिसे भाग्य कहते हैं।

अपना वर्तमान जीवन और भावी जीवन भी हम स्वयं सुधार सकते हैं। हमें कर्म करने की स्वतंत्रता और भले-बुरे कर्म के पहचान करने की क्षमता परमात्मा ने प्रदान की है। शुभ कर्मों से सुख-शान्ति, आनन्द यश, कीर्ति को प्राप्त किया जा सकता है इसके विपरीत स्वार्थ में लिप्त होकर केवल अपना सोच रखने से यह जीवन की सार्थकता नहीं, यह विचारधारा तो पाशविक है।

बाहरी समस्त सुख अस्थायी हैं और सदा एक समान सुखकारी नहीं हो सकते। इच्छाएँ बार-बार उठती हैं। हम उन्हें तृप्त करते हैं। तृप्त करने में उनसे समीपता सुख और उनसे दूरी दुःख का कारण बन जाते हैं। इनकी पूर्ति से कुछ समय के लिए सुख आता है और फिर चला जाता है। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। इसलिए कोई भी भौतिक सुख जीवन में स्थायी नहीं होता। धन, सम्पत्ति, परिवार, पदों में पूर्ण सुख नहीं है, वास्तविक धन तो संतोष रूपी धन है।

इसीलिए कहा-

गौधन गजधन वाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान।।

जिन भोगों से सुख मिलता है। इच्छा पूर्ति न होने पर वे ही भोग दुःख का कारण भी बन जाते हैं। भोगों पर भोगों से नहीं उन पर नियन्त्रण करने से विजय प्राप्त होती है। सबसे पहले दुर्गुणों को त्यागना आवश्यक है, यही सुखी जीवन के आधार हैं, जिनका वर्णन हम यहाँ कर रहे हैं।

आज दुनिया धन, सम्पत्ति को अपना जीवन लक्ष्य मानकर अन्य समस्त मानवीय गुणों और कर्तव्यों को अनदेखा कर रही है, इसे पाने के लिए दुर्गुणों में लिप्त हो रही है। किन्तु हजारों ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ अपार धन सम्पत्ति होने के बाद भी वे बहुत दुःखी हैं, चिन्तित हैं, भय में जी रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इस धन-सम्पत्ति को ही सुख-शान्ति का आधार मानना गलत है।

मन्त्र का दूसरा सन्देश है एक सफल जीवन के लिए सद्गुणों का पालन। मन्त्र में प्रभु से प्रार्थना की है कि, प्रभो! आप हमको सद्गुण, कल्याणकारी गुण, कर्म व

स्वभाव प्रदान करें। सद्गुण, कल्याणकारी गुण वे हैं जो अपने साथ दूसरों को भी लाभान्वित करते हैं।

अवगुणों का त्यागना और सद्गुणों को ग्रहण करना उपरोक्त उल्लिखित यजुर्वेद के इस पवित्र मन्त्र में बताया गया है। मानव जीवन के इसी महत्वपूर्ण दर्शन को दर्शाते हुए जीवन में किन बातों को आदर्श मानकर हम स्वीकार करें, तथा किन अवगुणों को हम त्यागें यह बताया गया है।

स्वीकार करने योग्य बातों का अनुकरण करने से जीवन में, सरलता, निर्भयता, सुख, सम्पन्नता, शान्ति, सम्मान और सुरक्षा होगी। दूसरी ओर जो विचार त्यागने योग्य हैं उन्हें यदि नहीं त्यागा तो जीवन में बाधाएँ, दुःख, अभाव, अज्ञान और असुरक्षा होगी और ऐसा जीवन ही नारकीय जीवन बनकर अभिशाप बन जाएगा।

सुख, सम्पन्नता, शान्ति को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है यह हर मनुष्य का अपना अलग-अलग विचार हो सकता है। हर विचारधारा अपना सुख अपनी दृष्टि से ढूँढ़ रही है। कुछ पतन के पथ को ही अपना सुख समझकर प्रसन्न हैं, वहीं कुछ इसे अनुचित मानकर त्याज्य समझते हैं। कुछ की दृष्टि में शुभकर्म सादा जीवन, सत्य आचरण, जीवन की श्रेष्ठता के लिए उचित हैं किन्तु कुछ व्यक्ति किसी भी प्रकार से सुख सामग्री प्राप्त कर केवल बाहरी सुख भोगने को ही सब कुछ मानते हैं। इस प्रकार के अनेक विचारों से भरी ये मानव जिन्दगी है। किन्तु हमारे जीवन का सही मार्गदर्शन, हमारे ग्रन्थों, महापुरुषों और ऋषियों ने किया है। ऐसा कोई विषय नहीं, ऐसी कोई बात नहीं जिस पर हमें उनका मार्गदर्शन उपलब्ध न हो।

यह मार्गदर्शन ही हमारा सुपथ है, अमृत पथ है, इस पर विश्वास कर जो व्यक्ति इसे जीवन में अपनाते हैं, वे ही जीवन में अमृतपान करते हैं। एक सफल जीवन के लिये हम क्या अपनावें व किससे सीखें, किसका अनुसरण करें, यह इस पवित्र वेद मन्त्र में हमें बताया है, मन्त्र इस प्रकार है-

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताध्नता जानता सं गमेमहि॥

- ऋग्वेद ५/५१/२

मन्त्र में परमात्मा ने उपदेश दिया कि- ऐ मनुष्यो! तुम कल्याण मार्ग पर चलते हुए सूर्य और चन्द्र के मार्ग का अनुसरण करो। जो दाता है, देने वाला है जो घात, द्वेष आदि हिंसक वृत्ति से रहित व बुरा सोचने वाला न हो उनके साथ एवं ज्ञानी के साथ संगति करो।

सूर्य और चन्द्रमा का अनुसरण करने का उपदेश इस मंत्र द्वारा जीवन कल्याण के लिए दिया है। कल्याण पथ वही है जो स्वयं को व दूसरों को सुख देता है लाभ पहुँचाता है। जो विचार व कार्य केवल स्वयं के लिए होते हैं, वे निम्न कोटि की श्रेणी में परिगणित होकर स्वार्थ कहे जाते हैं। सूर्य और चन्द्रमा को जन साधारण विशेष कर सनातन धर्मी बड़ा पवित्र मानते हैं, देवता मानते हैं और उसकी पूजा आराधना करते है। आज अनेक स्थानों पर सूर्य मन्दिर बने हुए हैं। भारत में प्रसिद्ध कोणार्क का सूर्य मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है। कलाकृति की दृष्टि से एक अति सुन्दर कृति है। धार्मिक विचारधारा वाले अनेक व्यक्ति प्रतिदिन सूर्य की ओर मुँह करके पानी चढ़ाते हुए उसकी पूजा करते देखे जाते हैं।

सूर्य और चन्द्रमा को हमारे जीवन में कितना महत्व दिया है इसका मनुष्य जीवन में किए जाने वाले १६ संस्कारों में से कुछ संस्कारों में देखने को मिलता है। यज्ञोपवीत संस्कार करते समय सूर्य के दर्शन का विधान है। इसमें चार मन्त्र सूर्य दर्शन की क्रिया में पढ़े जाते हैं। आचार्य शिष्य को कहता है-

ओ३म् सूर्यस्यावृतमन्वावर्तस्व असौ॥

सूर्य के समान प्रकाशवान ज्ञान के पुंज इस आचार्य के अनुव्रती बनने का उपदेश दिया है।

गुरुकुल में शिक्षा हेतु प्राचीन काल में विद्यार्थी का वेदारम्भसंस्कार होता था। उस संस्कार में भी

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु।

कहकर सूर्य के समान दीप्तिमान परमेश्वर का सम्बोधन किया गया है।

विवाह संस्कार में में भी सूर्य दर्शन कराने की विधि करवाई जाती है। यज्ञ करते समय **'सूर्यो ज्योति**

ज्योति सूर्यः स्वाहा व अन्य मन्त्रों से आहुति दी जाती है जिसमें सूर्य को ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा को हमारे जीवन में हम बहुत महत्व देते हैं। इसी सन्दर्भ में अथर्ववेद का एक मन्त्र अवलोकनीय है -

यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत्।
ऐषा त्वं कासे प्र पत समुन्द्रस्यालु विक्षरम्।।

- अथर्ववेद ५/२

अर्थात्- हे मनुष्य! जैसे सूर्य की किरणें शीघ्र आगे बढ़ती जाती हैं ऐसे ही तू ज्ञान और उपाय के बीच अन्तरिक्ष के प्रवाह स्थान की ओर आगे बढ़। ऋग्वेद के एक मन्त्र में भी कुछ ऐसा ही कहा है -

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धियो कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुमुवामपो,
मनुर्भव जनयादैव्यं जनम्।।

- ऋग्वेद २०/५३/६

हे मनुष्य ज्ञान के तन्तु को तनते हुए तू लोक के प्रकाशक सूर्य के नियम का पालन कर, उसका अनुसरण कर और मनुष्य बन। तथा और लोगों को भी दिव्य भगवान का उपासक बना। **क्रमशः.....**

- प्रकाश आर्य
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

स्वास्थ्य

tke|u

(एक औषधीय वृक्ष)

जामुन एक अत्यन्त उपयोगी वृक्ष है। यह छायादार और लम्बी आयु का होने से सड़क किनारे लगाया जाता है। इसे उगाने के लिए कम देखभाल की आवश्यकता होती है। यह पथरीली, ऊसर और नम जमीन पर आसानी से उगाया जा सकता है। यह वृक्ष लगभग १०० फुट तक ऊँचा होता है। वर्षा ऋतु में इसके फल पूरी तरह पक जाते हैं।

रासायनिक संगटन

जामुन के फल में ८३ प्रतिशत आद्रता होती है। इसके अतिरिक्त प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज द्रव्य, विटामिन ए. बी.सी., आक्जेलिक एसिड, गैलिक एसिड, टैनिन और एक सुगन्धित पदार्थ होता है। इसकी गुठली में विशेष रूप से कैल्शियम और प्रोटीन होते हैं। इसमें स्थित जम्बूलीन नामक ग्लुकोसाइट से मधुमेह निवारक क्रिया सम्पादित होती है।

गुणधर्म

जामुन का रस कसैला, खट्टा और मीठा होता है। जामुन का गुण लघु और रुक्ष, वीर्य शीत और विपाक कटु होता है। यह कफपित्त नाशक व वात वर्धक होता है। इसे नमक और काली मिर्च के साथ खाने से पेट में अफारा नहीं होता। यह दीपन, पाचन व स्तम्भन गुणयुक्त है। जामुन की गुठली के सेवन से रक्तगत व मूत्रगत शर्करा कम होती है। इससे रक्त प्रदर, रक्तातिसार व बहुमूत्र में भी लाभ होता है। जामुन के पत्तों का स्वरस उल्टी व रक्तपित्त में लाभप्रद है। पत्रसिद्ध तैल उपदंश व चर्मरोगों में बाह्य प्रयोग के लिए उपयोगी है। जामुन की छाल का काढ़ा बनाकर मुख में धारण करने से दांत मजबूत होते हैं। जामुन के फल, फल स्वरस, फलों की गुठली, पत्र व छाल औषधी के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। इसके फलों का सेवन करने से पहले निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखें।

- ☞ फल आकार में जितने बड़े होते हैं, उतने ज्यादा गुणकारी होते हैं। फलों को भोजन के बाद १२ बजे से ३ बजे के बीच में सेवन करना अधिक लाभप्रद है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है।
- ☞ खाली पेट खाने से अत्यधिक वात वृद्धि होती है। पेट में अफारा हो जाता है। अधिक मात्रा में जामुन खाने से भी अफारा हो जाता है। कच्चे, अधपके, सड़े गले जामुन खाने से हानि होती है। जामुन खाने के बाद दूध नहीं पीना चाहिए। जामुन को नमक और काली मिर्च के साथ ही खायें, इससे बात वृद्धि नहीं होती। नमक और कालीमिर्च के साथ सौंठ व अजवायन का चूर्ण मिलाकर जामुन के फल का सेवन करने से अधिक लाभकारी होते हैं।

जामुन का रस बनाने विधि

जामुन के फलों को उबलते हुए पानी में डालकर आंच से उतार कर ढक कर रख देवें। इसके बाद इन्हें मसलकर छान लेवें। इस प्रकार जामुन का रस प्राप्त किया जा सकता है।

रोगों में जामुन का प्रयोग-

रक्तातिसार- २५ ML जामुन के फलों का रस और अर्क गुलाब २५ ML में थोड़ी खांड मिलाकर पीने से खूनी दस्त ठीक होते हैं। वमन में भी इससे लाभ होता है।

अग्निमांद्य- जामुन का स्वरस २५ ML, अदरक का रस १ चम्मच, सैंधा नमक २ ग्राम, सौंठ चूर्ण ५०० मि. ग्राम, काली मिर्च का चूर्ण ५०० मि. ग्राम इन सबको मिलाकर सेवन करने से तीव्र भूख लगती है।

रक्त प्रदर- जामुन के रस में चावल का धोवन मिलाकर पीने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

२. जामुन की गिरी और कमल गट्टे की गिरी दोनों बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर दोनों के बराबर मिश्री मिलाकर ३-३ ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करने से कष्टदायक प्रदर रोग ठीक होता है।

मधुमेह- १. जामुन की गुठली की गिरी और मेथी बीज दोनों का चूर्ण बनाकर १-१ चम्मच दिन में

तीन बार जल से सेवन करें।

२. जामुन की गुठली का चूर्ण, आम की गिरी का चूर्ण, गुड़नार बूटी का चूर्ण, आंवला चूर्ण प्रत्येक १००-१०० ग्राम और हल्दी का चूर्ण ५० ग्राम मिलाकर रख लेवें। ५-५ ग्राम की मात्रा में दिन में दो से तीन बार सेवन करें।

३. जामुन की गुठली का चूर्ण, सूखे छोटे करेले का चूर्ण व आम की गुठली का चूर्ण प्रत्येक १००-१०० ग्राम तथा बिल्वपत्र चूर्ण व नीम पत्र चूर्ण दोनों ५०-५० ग्राम लेकर सबको ग्वारपाठे के रस में पीसकर आधा-आधा ग्राम की गोली बनाकर सूखाकर रख लेवें। २-२ गोली दिन में २ से ३ बार सेवन करें।

मुंहासे- जामुन की गुठली को पानी में घिसकर मुख पर लगावें साथ में जामुन का शर्बत बना कर पीवें।

कर्णपूय- जामुन की गुठली के चूर्ण को सरसों के तैल में पकाकर कपड़े से छानकर रख लेवें। इस तैल को कान में डालने से मवाद आना बन्द हो जाता है।

दाह- हाथ-पैर की जलन में इसकी गिरी को मसूर की दाल के साथ पीस कर लेप करने से लाभ होता है।

स्वप्न दोष- जामुन की गुठली के चूर्ण में बराबर मात्रा में त्रिफला चूर्ण मिलाकर ५-५ ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं सेवन करें।

गुर्दे की पथरी- जामुन की गुठली का चूर्ण मट्ठे के साथ सेवन करने से वृक्काश्मरी के रोगी को लाभ होता है।

मुख के छाले- जामुन के कोमल पत्तों को पानी के साथ पीसकर छान लें फिर इससे कुल्ला करने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं।

रक्तार्श- ताजे जामुन के पत्तों को गाय के दूध में पीसकर छानकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

अफीम का विष- जामुन के पत्ते खिलाने या इनका रस पिलाने से अफीम के विष का प्रभाव कम हो जाता है।

कुचले का विष- जामुन की गुठली का चूर्ण ५ से १० ग्राम गाय के दूध के साथ लेने से कुचले का विष प्रभाव कम हो जाता है।

बहुमूत्र- जामुन की छाल, बबूल की छाल और खैर की छाल के काढ़े में लोध्र का चूर्ण और शहद मिलाकर सेवन करने से बहुमूत्र, मधुमेह व सोगरोग आदि में लाभ होता है।

वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६, उदयपुर (राज.)

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

स्वामी जी शास्त्रार्थ निष्णात् थे। कई बार उनके शास्त्रार्थों में व्यंग-हास्य एवं विस्मित कर देने वाला ऐसा पुट होता था कि लोग आश्चर्यचकित रह जाते थे। स्वामी जी अपनी प्रकृति के अनुसार अत्यन्त सरल संस्कृत में भाषण देते थे अत्यन्त सरल संस्कृत में लिखते थे। कोई संस्कृत न जानने वाला व्यक्ति भी काफी हद तक उनके भाव समझ सकता था। आप उनके किए वेदभाष्य के संस्कृत भाग को देखिए। अत्यन्त सरल संस्कृत वहाँ आपको उपलब्ध है। जबकि संस्कृत के विद्वान् प्रायः कठिन से कठिन भाषा बनाकर के पाठक के समक्ष प्रस्तुत करने को ही अपनी विद्वता और पाण्डित्य का प्रमाण मानते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है कि स्वामी जी क्लिष्ट संस्कृत के जानकार नहीं थे। एक बार एक शास्त्री ने उनको ऐसे ही कहा कि स्वामी जी अब केवल भवति, पचति से काम नहीं चलेगा आपको शास्त्रीय संस्कृत बोलनी पड़ेगी। यह बात आने पर स्वामी जी महाराज ने अप्रसिद्ध-शब्द पूर्ण, समास बहुल, अनेकार्थ बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलना आरम्भ किया कि प्रतिवादी अचंभित रह गया।

एक बार स्वामी जी सर का मुण्डन करा रहे थे तो किसी ने कहा संन्यासियों का धर्म तो त्याग है आप इस देह विभूषण में क्यों लगे हुए हैं? स्वामी जी ने हँसकर कहा यदि बाल बढ़ाने में ही त्याग है तब तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी होगा। ऐसी बातों में त्याग और वैराग्य नहीं है। देह की रक्षा के लिए उसे संवारना-सुधारना धर्मानुकूल है।

इसी प्रकार एक बार किसी ने कहा कि स्वामी जी आप तो धन लेते हैं जबकि शास्त्र तो कहता है कि संन्यासियों को स्वर्ण नहीं देना चाहिए। तो स्वामी जी ने कहा कि इसके भाव को समझना चाहिए। संन्यासियों को संग्रह नहीं करना चाहिए परन्तु यदि परोपकार के लिए द्रव्य लेना भी पड़े तो कोई दोष नहीं है। फिर उन्होंने अपनी बात करते हुए कहा कि जब मैं गंगा तट पर पर्यटन करता था उन दिनों केवल कोपीन धारी दिगम्बर था उस समय मुझे कौड़ी को भी छूने की आवश्यकता न थी परन्तु अब आज मैंने जनहित के कार्यों में अधिक भाग लेना आरम्भ कर दिया है तो कूप मृत्तिका न्याय से लोगों से धन लेकर उन्हें हितकर कार्य में लगा देता हूँ। इस पर प्रश्न करने वाला निरुत्तर हो गया।

परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं था कि स्वामी जी किसी से भी प्रयोजन के लिए और किसी से भी धन स्वीकार कर लेते थे। एक बार सर टी. माधव राव श्री महाराज को अपने घर ले गए। उपदेश के पश्चात् माधव राव जी ने एक सहस्र मुद्रा उन्हें भेंट की तो महाराज ने उनको स्पष्ट कह दिया कि हम वल्लभमार्गियों के समान दुकानदार नहीं हैं और उन्होंने भेंट को ठुकरा दिया।

इन्हीं सर टी. माधवराव के यहाँ एक गोविन्द राम जी का मुकदमा चल रहा था। गोविन्द राम जी के दामाद पण्डित कृष्णराम जी के पास आए और कहा कि स्वामी जी का सर टी. माधवराव पर विशेष प्रभाव है, आप स्वामी जी को कहें कि वे दीवान साहब को कहकर मेरे ससुर के मुकदमे का फैसला कर दें। यदि वे ऐसा करवा देंगे तो मैं स्वामी जी के वेदभाष्य की सहायता के लिए बीस सहस्त्र रुपया दूँगा। जब कृष्णराम ने यह निवेदन महाराज से किया तो स्वामी जी ने उनको बहुत फटकारा और कहा ऐसे रुपए का प्रलोभन देकर कोई हमसे गलत काम नहीं करवा पाएगा, हम रुपयों के भूखे नहीं हैं। परन्तु कुछ दिनों बाद जब स्वामी जी दीवान साहब के घर गए थे तो इस घटना का वर्णन आ गया। दीवान साहब ने बिना कुछ कहे कुछ समय पश्चात् गोविन्दराम के मुकदमे का निर्णय करके २०००० रुपये का दण्ड लेकर उन्हें जेल से मुक्त कर दिया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरुण चतुर्वेदी नवलखा महल में

दिनांक २२ जून २०२६ को नवलखा महल में पधारे राजस्थान राज्य वित आयोग के अध्यक्ष श्री अरूण चतुर्वेदी ने कहा नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र भारत की गौरवमयी परम्परा को पुनः जीवन्त करने का केन्द्र बन गया है। वे उदयपुर स्थित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नवलखा महल सांस्कृतिक

केन्द्र के तहत हाल ही में तैयार किया गया नव प्रकल्प एम.डी.एच. राष्ट्र मन्दिर वास्तव ऐसा प्रकल्प तैयार किया गया है जहाँ भारत की प्राचीन गौरवमयी परम्परा जीवन्त रूप में प्रकट हो गई है। उन्होंने ऐसे प्रकल्प को तैयार कराने वाले दानवीर पूज्य महाशय धर्मपाल जी के पुत्र एम.डी.एच. ग्रुप के अध्यक्ष महाशय राजीव जी गुलाटी का साधुवाद प्रकट किया और कहा कि उनके द्वारा तैयार कराये गये इस प्रकल्प के माध्यम से देश विदेश से आने वाले पर्यटक ऐसे गुमनाम क्रान्तिकारियों के जीवन चरित्र का दिग्दर्शन करते हैं जिन्होंने देश की स्वतंत्रता एवं गौरव के लिए अपने प्राणों की आहुति दी परन्तु उनका नाम इतिहास के पन्नों में दब गया है। उन्होंने आह्वान किया कि यहाँ सभी को आकर यहाँ के प्रकल्पों का दर्शन करना चाहिए।

इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के राजस्थान प्रदेश के उपाध्यक्ष श्री प्रमोद सामर ने कहा कि नवलखा महल आर्य समाज को सुपुर्द करने से लेकर आज तक मैं यहाँ से जुड़ा हुआ हूँ। नवलखा महल जब आर्य समाज को प्राप्त हुआ तब बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। परन्तु दानदाताओं तथा श्री अशोक आर्य जी एवं उनकी टीम के द्वारा इस केन्द्र को आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातनाम बना दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि यहाँ के प्रकल्पों के माध्यम से स्थानीय जनता ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की जनता यहाँ से शिक्षा, संस्कार तथा देश प्रेम की भावना के प्रति आकर्षित हो रही है। यहाँ की प्रगति के लिए हमारा हर सम्भव सहयोग रहेगा तथा यहाँ के विकास के लिए आ रही रुकावटों को दूर करने के लिए हम अपना पूर्ण सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी, उदयपुर शहर के जिलाध्यक्ष श्री गजपाल सिंह राठौड़ ने कहा कि नवलखा महल वह स्थान है जहाँ आकर चित्त को शान्ति मिलती है तथा यहाँ विभिन्न प्रकल्प आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, राष्ट्रोन्नायक वीथिका, सुरेश चन्द्र दीनदयाल गुप्त मिनी थियेटर, सोलह संस्कार वीथिका, विशाल यज्ञशाला, पुस्तकालय तथा राष्ट्र मन्दिर। सभी प्रकल्प एक से बढ़कर एक हैं। ऐसे प्रकल्प विश्वभर में कहीं नहीं है। अतः यहाँ युवा पीढ़ी तथा बालकों को विशेष रूप से आना चाहिए और यहाँ के प्रकल्पों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी, उदयपुर शहर जिला महामंत्री एवं उदयपुर नगर निगम के पूर्व उप महापौर श्री पारस सिंघवी ने कहा कि यहाँ जो भी दान देता है उसके दान का वास्तव में सही उपयोग हो रहा है। यहाँ तैयार किए गए सोलह संस्कार की जो वीथिका है उनका अवलोकन करने पर हमने जीवन में सोलह संस्कारों का महत्व जाना। इसी प्रकार यहाँ प्राचीन ऋषि मुनियों, क्रान्तिकारियों के जीवन-चरित्र का भी ज्ञान प्राप्त हुआ है।

श्री अरूण चतुर्वेदी तथा आगन्तुकों का पगड़ी, उपरणा तथा तिलक कर स्वागत श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा गया।

इससे एक दिन पूर्व ही राजस्थान राज्य राजस्थान अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास आयोग के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार नायक ने उदयपुर प्रवास के दौरान नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि समाज के वंचित वर्ग को अन्य नागरिकों की तरह अधिकार दिलाने के लिए आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। जब देश में छूआछूत जैसी बुराई व्यापक स्तर पर थी तथा ऐसे समय में अछूत समझे जाने वाले लोगों को मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज ने किया। महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रयासों के कारण इन जाति के लोगों ने आर्य समाज की ओर अपना रूख किया।

उन्होंने यहाँ एम.डी.एच. राष्ट्र मन्दिर, राष्ट्रोन्नायक वीथिका, श्री सुरेश चन्द्र दीनदयाल गुप्त मल्टी मीडिया सेन्टर, संस्कार वीथिका, आर्यावर्त चित्रदीर्घा, माता लीलावन्ती सभागार इत्यादि का अवलोकन किया। नवलखा महल आगमन पर उनका पगड़ी, उपरणा व तिलक लगाकर स्वागत श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक

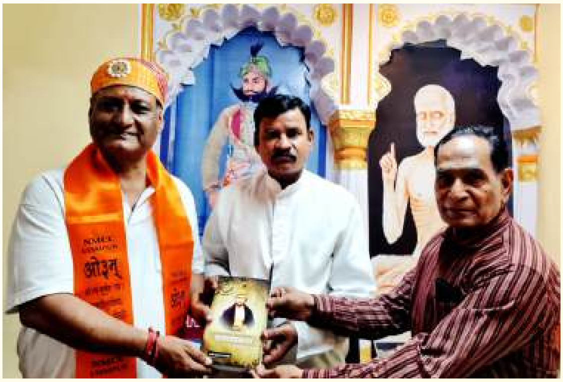

आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर न्यास के कार्यालय मंत्री श्री भँवर लाल गर्ग, पुरोहित श्री नवनीत आर्य, लेखाकार श्री दिव्येश सुथार, जन सम्पर्क सचिव श्री विनोद कुमार राठौड़, एनएमसीसी की श्रीमती दुर्गा गोरमात, गाइड श्री सिद्धम, श्री गौरव, श्रीमती रेखा, श्री देवीलाल, श्रीमती निरमा, श्री लक्ष्मण तथा कई कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

- भँवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री

नन्हे मास्टर माइण्ड का बड़ा कारनामा : आँखों पर पट्टी बांधकर दो खिलाड़ियों से खेली शतरंज

प्रतिभा और दृढ़ संकल्प का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उदयपुर के ५ वर्षीय बाल प्रतिभा गौरीक लोढ़ा ने एक ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जिसने न केवल शहर बल्कि पूरे राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। आँखों पर पट्टी बाँधकर एक साथ दो खिलाड़ियों के साथ ब्लिट्ज शतरंज खेलने का अनोखा कीर्तिमान स्थापित कर गौरीक ने इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है।

इतनी कम उम्र में हासिल की गई यह उपलब्धि गौरीक की असाधारण स्मरण शक्ति, गहन एकाग्रता और अद्भुत मानसिक क्षमता का प्रमाण है। उन्होंने बिना किसी दृश्य सहायता के केवल अपने दिमाग में शतरंज की बिसात और चालों को याद रखते हुए दो अलग-अलग खिलाड़ियों के साथ एक साथ मुकाबला खेलकर सभी को हैरत में डाल दिया।

इस रिकॉर्ड की आधिकारिक पुष्टि १६ अप्रैल २०२६ को हुई। उस समय गौरीक की आयु मात्र ५ वर्ष ८ माह १३ दिन थी। विशेषज्ञों का मानना है कि इतनी छोटी उम्र में इस स्तर का प्रदर्शन दुर्लभ है और यह भविष्य में बड़ी उपलब्धियों की मजबूत नींव साबित हो सकता है।

गौरीक की इस सफलता के पीछे सुनियोजित प्रशिक्षण और निरन्तर अभ्यास की अहम् भूमिका रही। गौरीक के माता-पिता सिद्धार्थ लोढ़ा और सलोनी लोढ़ा ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा, सकारात्मक वातावरण और उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वे असम्भव दिखने वाले लक्ष्य भी हासिल कर सकते हैं।

गौरीक की इस उपलब्धि ने यह साबित कर दिया है कि उम्र चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, यदि प्रतिभा के साथ मेहनत, अनुशासन और सही प्रशिक्षण जुड़ जाए तो सफलता के नए आयाम स्थापित किए जा सकते हैं। आज गौरीक लोढ़ा युवा पीढ़ी और अभिभावकों के लिए प्रेरणा बनकर उभरे हैं। आँखों पर पट्टी थी, लेकिन सपनों पर नहीं,गौरीक ने अपनी प्रतिभा से इतिहास रच दिया।

- Prakash Sharma June ०१, २०२६ खेल

{ध्यान दें कि यह ब्लाइण्डफोल्ड शतरंज मानव मस्तिष्क की अद्भुत स्मरण शक्ति और कल्पना शक्ति का उदाहरण है, न कि आँखों के बिना वास्तविक दृष्टि का। -सम्पादक}

गीत साधकों का सम्मान, सुधाकर पीयूष को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

सम्मान ग्रहण करतीं सुधाकर पीयूष, साथ में संयोजिका हेमा जोशी।

उदयपुर | विश्व संगीत दिवस पर सुरों की मंडली संस्था वरिष्ठ विंग द्वारा आयोजित संगीत सम्मान समारोह में संगीत एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कलाकारों का सम्मान किया गया। समारोह में वरिष्ठ ग़ज़ल गायक डॉ. प्रेम भंडारी को विशेष सम्मान प्रदान किया गया, जबकि स्वर्गीय सुधाकर पीयूष को मरणोपरांत लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा गया। उनके परिजनों ने सम्मान ग्रहण किया। कार्यक्रम में देवेंद्र सिंह हिरण, फैय्याज़ खान, मारिषा दीक्षित सहित कई कलाकार सम्मानित हुए। संगीत पहेली प्रतियोगिता के 11 विजेताओं को भी पुरस्कार दिए गए।

हेमा जोशी, एच. काजी, राजकुमार बापना सहित कलाकारों की प्रस्तुतियों ने संगीतमय समां बांध दिया और श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी।

श्री हरि वार्षणेय
1 JULY

श्रीमती शारदा गुप्ता
3 JULY

श्री अशोक आर्य
13 JULY

श्री मोती लाल आर्य
20 JULY

डॉ. अमृतलाल तापड़िया
22 JULY

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी
23 JULY

इन सभी सम्मानित न्यासी आर्य बन्धुओं को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास, NMCC एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

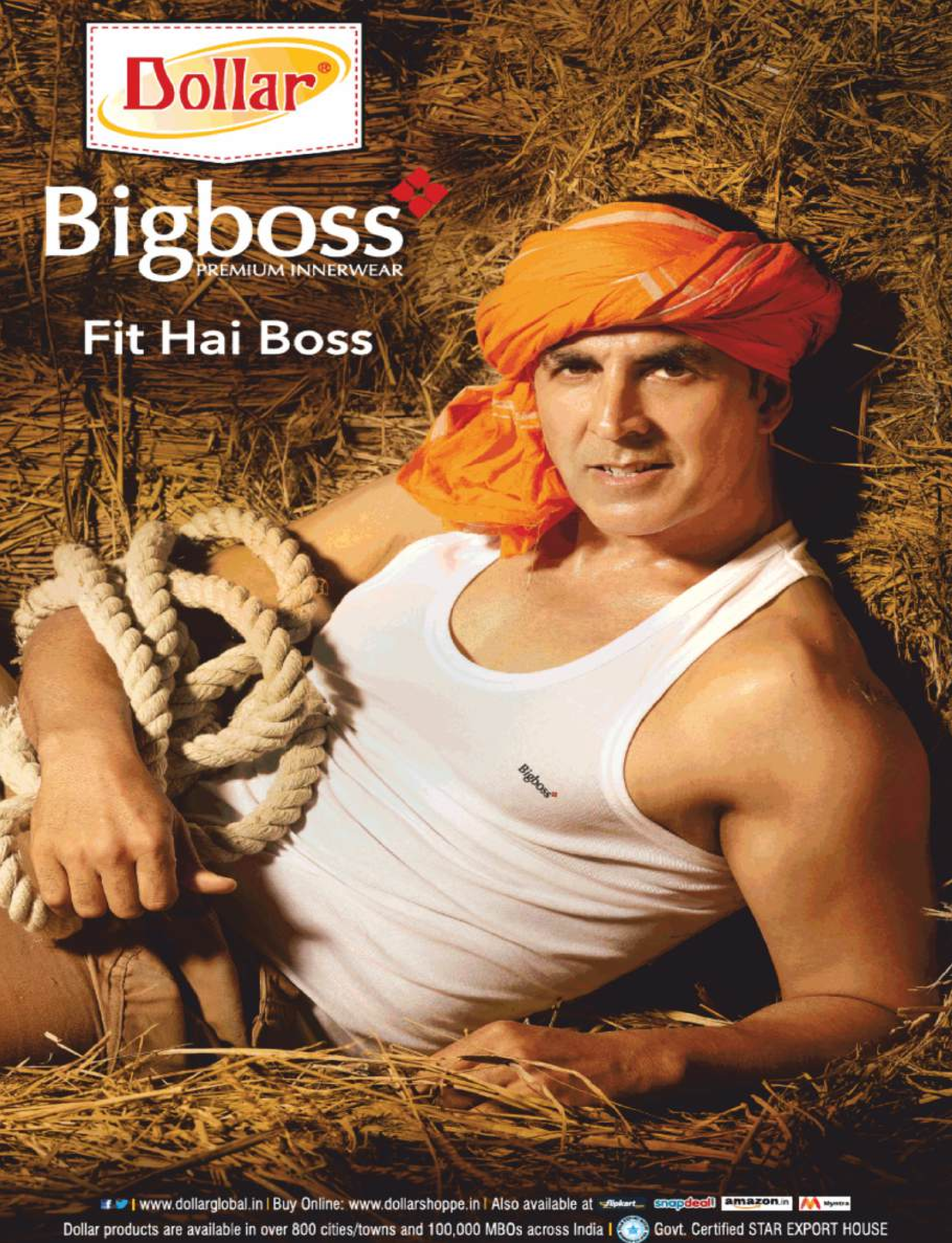
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at flipkart snapdeal amazon.in Myntra
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है। और दिन-रात में जब-जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों, तब-तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें।

सत्यार्थ प्रकाश
चतुर्थ समुल्लास पृष्ठ ९६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर